रीवा
10 जनवरी 2025 शुक्रवार

दैनिक मीडियाऑडीटर

रीवा, सतना से एक साथ प्रकाशित

स्मृति मंधाना की ...
@ पेज 7

गणतंत्र दिवस परेड में सरपंच, कारीगर सहित दस हजार विशेष अतिथि

नई दिल्ली (एजेंसी)। नई दिल्ली÷ पैरालंपिक दल के सदस्य, उल्लेखनीय प्रदर्शन करने वाले गांवों के सरपंच, हथकरघा कारीगर और वन एवं वन्यजीव संरक्षण कार्यकर्ता उन लगभग 10,000

● उल्लेखनीय प्रदर्शन करने वालों को दिया जायेगा आमंत्रण

विशेष अतिथियों में शामिल हैं जिन्हें यहां कर्तव्य पथ पर 76वें गणतंत्र दिवस की परेड देखने के लिए आमंत्रित किया गया है। सरकार ने गुरुवार को यह जानकारी दी।

पहली बार दिखेंगे ये खास मेहमानः रक्षा मंत्रालय ने एक बयान में कहा, स्वर्णिम भारत के

इन वास्तुकारों में विविध पृष्ठभूमि के लोग हैं, जिनमें विभिन्न क्षेत्रों में सर्वश्रेष्ठ प्रदर्शन करने वाले और सरकार की योजनाओं का सर्वोत्तम उपयोग करने वाले लोग शामिल हैं। इसमें कहा गया है कि राष्ट्रीय महत्व के आयोजनों में जनभागीदारी बढ़ाने के उद्देश्य से गणतंत्र दिवस परेड देखने के लिए लगभग 10,000 विशेष अतिथियों को आमंत्रित किया गया है। मंत्रालय ने यह भी बताया कि इन विशेष अतिथियों को विभिन्न क्षेत्रों और कार्यक्षेत्रों से चुना गया है। इसके लिए कुल 31 श्रेणियां थी। इन श्रेणियों में सर्वोच्च प्रदर्शन करने वाले गांवों के सरपंच, आपदा राहत कर्मचारी, सर्वश्रेष्ठ प्रदर्शन करने वाले जल योद्धा, जीवंत गांवों के अतिथि (गेस्ट्स फ्रॉम वाइब्रेंट विलेजेज़), पूर्वोत्तर राज्यों के अतिथि, सर्वश्रेष्ठ पेटेंट धारक, सर्वश्रेष्ठ स्टार्ट-अप व सड़क निर्माण श्रमिक समेत अन्य शामिल हैं। बयान के अनुसार, आमंत्रित लोगों में हथकरघा कारीगर, पैरालंपिक दल के सदस्य और वन एवं वन्यजीव संरक्षण कार्यकर्ता भी शामिल हैं।

राष्ट्रपति भवन 21-29 जनवरी तक आम जनता के लिए रहेगा बंदः वहीं, आपको बता दें कि आगामी गणतंत्र दिवस परेड और बीटिंग रिट्रीट समारोह के कारण राष्ट्रपति भवन (सर्किट-1) 21 से 29 जनवरी तक आम जनता के लिए बंद रहेगा। सर्किट 1 आगंतुकों को राष्ट्रपति भवन की मुख्य इमारत का भ्रमण कराता है, तथा उन्हें भवन के अग्रभाग, प्रमुख कक्षों और लंबे ड्राइंग रूम आदि दिखाता है। राष्ट्रपति भवन के प्रांगण में आयोजित होने वाला 'चेंज ऑफ गार्ड' समारोह एक सैन्य परंपरा है। यह हर सप्ताह आयोजित किया जाता है ताकि राष्ट्रपति के बॉडीगार्ड्स के एक नए समूह को कार्यभार संभालने का मौका मिल सके।

संक्षिप्त समाचार

म्यांमार की सेना ने अपने ही देश के एक गांव पर किया हवाई हमला, 40 लोगों की मौत, कई घायल

म्यांमार (एजेंसी)। म्यांमार में हथियारबंद अल्पसंख्यक जातीय समूह के नियंत्रण वाले एक गांव पर सेना के हवाई हमले में कम से कम 40 लोगों की मौत हो गई और लगभग 20 अन्य घायल हो गए। जातीय समूह और एक स्थानीय परमार्थ संस्था के पदाधिकारियों ने बृहस्पतिवार

को इस बारे में जानकारी दी। पदाधिकारियों ने दावा किया कि हवाई हमले से लगी आग में सैकड़ों घर जलकर खाक हो गए। उन्होंने बताया कि हमला बुधवार को रामरी द्वीप पर क्योक नी माव गांव में हुआ, जो पश्चिमी रखाइन प्रांत में अल्पसंख्यक जातीय समूह 'अराकान सेना' के नियंत्रण वाला क्षेत्र है। हालांकि, सेना ने इलाके में किसी हमले की पुष्टि नहीं की है। गांव की स्थिति की स्वतंत्र रूप से पुष्टि नहीं की जा सकी है, क्योंकि क्षेत्र में इंटरनेट और मोबाइल फोन सेवा तक पहुंच लगभग बाधित है। गौरतलब है कि, म्यांमार में हिंसा तब शुरू हुई थी जब सेना ने फरवरी 2021 में ह्वठ्ठद्द स्ड्डठ्ठ स्ह्लह्व च4द्ब की निर्वाचित सरकार को हटा दिया था। सेना ने शांतिपूर्ण प्रदर्शनों को दबाने के लिए बल का प्रयोग भी किया है।

लॉस एंजिलिस में लगी भीषण आग ने मचाई तबाही

लॉस एंजिलिस **(एजेंसी)।** अमेरिका के लॉस एंजिलिस शहर और उसके आसपास लगी भीषण

आग में बिली क्रिस्टल, मैंडी मूर और पेरिस हिल्टन समेत विभिन्न हस्तियों के मकान जलकर राख हो गए हैं। कैलिफोर्निया के दमकल कर्मी तेज हवाओं के कारण इलाके में दूर-दूर तक फैल रही आग को बुझाने में जुटे हुए हैं। आग की चपेट में आने से कई मकान तबाह हो गए हैं और सड़कें जाम हो गई हैं। हजारों लोग सुरक्षित स्थानों की ओर जा रहे हैं। आग मंगलवार रात में लगी थी जिस पर अब तक काबू नहीं पाया जा सका। पांच लोगों की मौत हो गई है साथ ही एक लाख से अधिक लोगों को दूसरे स्थानों पर जाने का आदेश दिया गया है। आग मंगलवार रात हॉलीवुड बाउल के पास और हॉलीवुड वॉक ऑफ फेम से कुछ ही दूरी पर लगी थी। जंगल में लगी भीषण आग के कारण कई सितारों के घर तबाह हो गए हैं। मूर का पासाडेना के पास अल्ताडेना इलाके में स्थित घर आग में जलकर राख हो गया। अभिनेत्री-गायिका ने 'इंस्टाग्राम' पर एक पोस्ट में लिखा, ÷ईमानदारी से कहूं तो मैं सदमे में हूं। मेरे बच्चों का स्कूल भी जलकर तबाह हो गया। हमारे पसंदीदा रेस्तरां जलकर खाक हो गए। बहुत से दोस्तों और प्रियजनों ने भी सब कुछ खो दिया है। ÷द प्रिंसेस ब्राइड÷ और कई अन्य फिल्मों के स्टार एल्वेस ने 'इंस्टाग्राम' पर लिखा कि उनका परिवार सुरक्षित है लेकिन आग में पैलिसेड्स स्थित उनका घर जल गया। एल्वेस ने लिखा, ÷दुख है कि हमने अपना घर खो दिया लेकिन शुक्र है कि हम इस विनाशकारी आग से बच निकले।

अखिलेश यादव के चाचा का निधन

इटावा (एजेंसी)। समाजवादी पार्टी के अध्यक्ष अखिलेश यादव के चाचा राजपाल सिंह यादव का लंबी बीमारी के बाद गुरुवार तड़के एक प्राइवेट अस्पताल में निधन हो गया। वह 73 वर्ष के थे। यह जानकारी सपा के राष्ट्रीय महासचिव रामगोपाल यादव ने दी। रामगोपाल ने अपने सोशल मीडिया हैंडल ङ्ग पर कहा, ''मैं अत्यंत दुख के साथ ये सूचित कर रहा हूं कि मेरे अनुज राजपाल सिंह का आज सुबह चार बजे मेदांता अस्पताल, गुरुग्राम में असामयिक निधन हो गया है। उनका अंतिम संस्कार मेरे पैतृक गांव सैफ़ई में आज दोपहर बाद किया जाएगा। प्रभु उनकी आत्मा को शांति दे और उन्हें अपने श्री चरणों में स्थान दे। ओम शांति!'' राजपाल सिंह यादव दिवंगत सपा संरक्षक मुलायम सिंह यादव के छोटे भाई थे। मुलायम सिंह यादव के परिवार के सदस्य होने के बावजूद राजपाल ने सक्रिय राजनीति से दूर रहना चुना। वह वंचितों और जरूरतमंदों की मदद के लिए जाने जाते थे। उनकी पत्नी प्रेमलता यादव जिला पंचायत अध्यक्ष रह चुकी हैं और उनके बेटे अभिषेक यादव उर्फ अंशुल और आर्यन हैं। अंशुल लगातार दूसरी बार जिला पंचायत अध्यक्ष चुने गए हैं। राजपाल सिंह के पार्थिव शरीर को उनके पैतृक गांव सैफई लाया गया है, जहां गुरुवार शाम को उनका अंतिम संस्कार किया जाएगा।

सुप्रीम कोर्ट बोला- 14 मार्च तक योजना लागू करे सरकार

सड़क हादसे के बाद घायल को मिलेगा कैशलेस इलाज

नई दिल्ली (एजेंसी)। सुप्रीम कोर्ट ने सड़क हादसे के बाद घायलों के इलाज के लिए अहम फैसला सुनाया है। कोर्ट ने कहा है कि सरकार को ऐसी योजना बनानी चाहिए। जिससे लोगों को हादसे के बाद बिना कोई पैसा दिए इलाज मिल सके। सुप्रीम कोर्ट ने कहा है कि केंद्र सरकार ÷गोल्डन ऑवर÷ अवधि में सड़क दुर्घटना पीड़ितों के लिए कैशलेस चिकित्सा सुविधा की योजना तैयार करे। गंभीर चोट लगने के बाद पहले एक घंटे को ÷गोल्डन ऑवर÷ कहा जाता है। घायल के इलाज के लिए ये वक्त सबसे अहम माना जाता है।

गंभीर चोट लगने पर एक घंटे के अंदर उचित इलाज बेहद जरूरी होता है। इस दौरान इलाज मिलने पर घायल व्यक्ति के बचने की संभावना ज्यादा रहती है। देर होने पर मौत या अपंग होने की आशंका बढ़ जाती है।

कोर्ट ने क्या कहा? सुप्रीम कोर्ट ने कहा कि कई बार ऐसा होता है कि हादसे में घायल हुए व्यक्ति के करीबी और परिजन उसके आस-पास नहीं होते हैं। इसलिए उसकी मदद करने वाला कोई नहीं होता है।

घायल व्यक्ति को गोल्डन ऑवर में जरूरी उपचार मिलना चाहिए, लेकिन अक्सर गोल्डन ऑवर में जरूरी इलाज से मना कर दिया जाता है। अस्पताल भी ऐसी सूरत में कभी-कभी पुलिस के आने तक इंतजार करते हैं। उनकी चिंता इलाज में लगने वाले खर्च को लेकर होती है। कई मामलों में अगर गोल्डन ऑवर के दौरान जरूरी उपचार नहीं मिलता है, तो घायलों की जान जा सकती है। ऐसे में कैशलैस योजना जरूरी है।

14 मार्च तक नीति लागू करे सरकारः जस्टिस अभय एस ओका और जस्टिस ऑगस्टीन जॉर्ज मसीह की बेंच ने कहा कि मोटर वाहन अधिनियम की धारा 162 के तहत गोल्डन ऑवर के दौरान दुर्घटनाओं के पीड़ितों के कैशलेस उपचार की जिम्मेदारी केंद्र सरकार की बनती है। कोर्ट ने सरकार को योजना लागू करने के लिए 14 मार्च तक का समय दिया है। 24 मार्च को सुप्रीम कोर्ट इस मसले पर दोबारा सुनवाई करेगा।

'पति दोस्तों से पैसे लेकर रेप करवाता है'

बुलंदशहर (एजेंसी)। उत्तर प्रदेश के बुलंदशहर में एक सनसनीखेज मामला सामने आया है। यहां एक महिला ने आरोप लगाया है कि उसका पति ही उसे दूसरे मर्दों के साथ संबंध बनाने के लिए मजबूर करता है और इसका वीडियो बनाकर कमाई करता है। पीड़िता ने यह भी बताया है कि उसका पति अपने दोस्तों से पैसे लेकर उसका रेप करवाता है। परेशान

होकर महिला ने मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ और एसएसपी से न्याय की गुहार लगाई है। जानकारी के अनुसार गुलावठी थाना क्षेत्र निवासी महिला ने बताया कि 14 साल पहले बुलंदशहर के एक गांव में महिला की शादी हुई थी। उसके चार बच्चे हैं। उसका पति बाहर काम करता है और अक्सर दोस्तों को साथ लेकर घर आता है। महिला का पति पर उस पर अन्य युवकों के साथ संबंध बनाने का दवाब बनाता है। जब अन्य युवक उसके साथ संबंध बनाते हैं तो महिला की पति इस दौरान वीडियो बना लेता है। वीडियो से पैसा भी कमाने का आरोप महिला ने लगाया है। महिला ने अपनी शिकायत में बताया है कि जब उसने अन्य युवकों के साथ संबंध बनाने से मना कर दिया तो उसका पति वीडियो वायरल करने की धमकी दे रहा है।

ट्रंप के शपथ ग्रहण समारोह के लिए आया बाइडेन से 3 गुना ज्यादा चंदा

बरसे 17 करोड़ अमेरिकी डॉलर

वाशिंगटन (एजेंसी)। अमेरिका के निर्वाचित राष्ट्रपति डोनाल्ड ट्रंप के आगामी शपथ ग्रहण समारोह के लिए अमेरिकियों ने धन की बारिश कर दी है। दानताताओं ने रिकॉर्ड 17 करोड़ अमेरिकी डॉलर से अधिक का चंदा देकर सबको हैरान कर दिया है। यह चंदा अमेरिका के बड़े कारोबारियों और दानदाताओं ने समारोह के लिए बढ़-चढ़कर चंदा दिया है। यह जानकारी धन जुटाए जाने के बारे में प्रत्यक्ष जानकारी रखने वाले एक व्यक्ति ने दी है, जो सार्वजनिक रूप से बात करने के लिए अधिकृत नहीं है।

ट्रंप की शपथ ग्रहण समारोह से संबंधित समिति ने बुधवार को प्रतिक्रिया मांगे जाने पर कोई जवाब नहीं दिया। समिति ने अभी तक यह विस्तृत रूप से नहीं बताया है कि वह चंदे की राशि को कैसे खर्च करने की योजना बना रही है। चंदे का इस्तेमाल आम तौर पर शपथ ग्रहण कार्यक्रमों से जुड़े खर्चों के भुगतान के लिए किया जाता है, जैसे कि परेड आदि।

डोनाल्ड ट्रंप को बाइडेन से करीब 3 गुना अधिक चंदा शपथ ग्रहण समारोह के लिए हासिल हुआ है। इससे ट्रंप की लोकप्रियता का अंदाजा आसानी से लगाया जा सकता है। चंदे के बारे में जानकारी देने वाले व्यक्ति ने बताया कि शपथ ग्रहण समारोह के बाद बचा हुआ पैसा भविष्य में ट्रंप राष्ट्रपति पुस्तकालय के लिए इस्तेमाल किए जाने की उम्मीद है। संघीय निर्वाचन रिकॉर्ड के अनुसार, इससे पहले 2020 में जो बाइडन के शपथ ग्रहण समारोह के लिए लगभग 6.2 करोड़ अमेरिकी डॉलर का चंदा दिया गया था। वहीं, 2016 में ट्रंप के शपथ ग्रहण समारोह के लिए रिकॉर्ड 10.7 करोड़ अमेरिकी डॉलर चंदा हासिल हुआ था।

'भविष्य युद्ध में नहीं, बल्कि बुद्ध में है'

प्रवासी भारतीय दिवस सम्मेलन में पीएम मोदी ने किया संबोधित

भूवनेश्वर (एजेंसी)। धानमंत्री नरेंद्र मोदी दो दिवसीय दौरे पर ओडिशा में हैं। उन्होंने भूवनेश्वर में आज 18वें प्रवासी भारतीय दिवस सम्मेलन में हिस्सा लिया। इस दौरान उन्होंने अपने संबोधन में कहा कि ओडिशा में कदम-कदम पर हमारे हैरिटेज के दर्शन होते हैं। सैंकड़ें वर्ष पहले भी ओडिशा से हमारे कारोबारी लंबा संमुद्री सफर कर बाली, सुमात्रा, जावा जैसे स्थानों पर जाते थे। इसी स्मृति में आज भी बाली यात्रा का आयोजन होता है। यही ओडिशा में औली नाम का वो स्थान है जो शांति का बड़ा प्रतीक है। दुनिया में जब तलवार के जोर पर साम्राज्य बनाने का दौर था तब हमारे सम्राट अशोक ने यहां शांति का रास्ता चुना था। हमारी विरासत का ये वही फल है जिसकी प्रेरणा से आज भारत दुनिया को कह पाता है कि भविष्य युद्ध में नहीं, बल्कि बुद्ध में है, इसलिए ओडिशा की इस धरती पर आपका स्वागत करना मेरे लिए बहुत विशेष हो जाता है।

उन्होंने कहा, ÷मैंने हमेशा भारतीय डायस्पोरा को भारत का राष्ट्रदुत माना है। मुझे बहुत खुशी होती है जब पूरी दुनिया में

आप सभी साथियों से मिलता हूं। जो प्यार मुझे मिलता है वो भूल नहीं सकता। आपका आशीर्वाद हमेशा साथ रहता है। पीएम मोदी ने कहा, बीते 10 वर्षों में दुनिया के हर लीडर से मुलाकात हुई। सभी आप लोगों की बहुत प्रशंसा करते हैं। इसका एक कारण सोशल वैल्यू है। हम सिर्फ मदर ऑफ डेमोक्रेसी ही नहीं है, बल्कि डेमोक्रेसी हमरी जीवन पद्धति है। पीएम मोदी ने आगे कहा, ÷हमें डायवर्सिटी सीखनी नहीं पड़ती, हमारा जीवन ही इससे चलता है। हम जहां जाते हैं वहां के नियम, वहां की संस्कृति की रिस्पेक्ट करते हैं। हम पूरी ईमानदारी से उस देश की सोसायटी की सेवा करते हैं। इन सबके साथ ही हमारे दिल में भारत भी धड़कता रहता है।

उत्तराखंड में इसी महीने लागू होगा यूसीसी

सीएम धामी का बड़ा ऐलान

बरेली (एजेंसी)। उत्तराखंड के मुख्यमंत्री पुष्कर सिंह धामी ने अपने राज्य में की गई विभिन्न पहलों का जिक्र करते हुए गुरुवार को कहा है कि देवभूमि उत्तराखंड में समान नागरिक संहिता (यूसीसी) इसी महीने लागू होगी। उन्होंने यहां कहा कि उत्तराखंड देश का पहला राज्य है जहां समान नागरिक संहिता कानून होगा। पहले माना जा रहा था कि धामी सरकार 1 जनवरी 2025 से राज्य में यूसीसी को लागू कर देगी। हालांकि, निकाय चुनाव को लेकर अधिसूचना जारी होने की वजह से सरकार 23 जनवरी तक कोई फैसला नहीं ले सकती है। इस स्थिति में माना जा रहा है कि उत्तराखंड की धामी सरकार 26 जनवरी 2025 से यूसीसी लागू करने की घोषणा कर सकती है। सीएम धामी ने कहा है कि देवभूमि उत्तराखंड में लगातार श्रद्धालुओं और पर्यटकों का आगमन बढ़ता जा रहा है।

उन्होंने कहा, हरिद्वार और ऋषिकेश में हम गंगा कॉरिडोर बनाएंगे। शारदा नदी पर भी कॉरिडोर बनाया जा रहा है इस पर काफी काम शुरू हो चुका है। यहां आयोजित 29 वें उत्तरायणी मेला का उद्घाटन करने पहुंचे धामी ने कहा कि उत्तराखंड में काफी विकास कार्य चल रहे हैं। उनका कहना था कि बाबा केदार नाथ पर पुनर्निर्माण हो रहा है। वहां उपचुनाव हुआ और भाजपा को वहां विजय मिली। बद्रीनाथ धाम में मास्टर प्लान से काम हो रहा है। कुमाऊं क्षेत्र में जितने मंदिर है उनके सौंदर्यीकरण का काम और पुनर्निर्माण का काम लगातार हो रहा है। उन्होंने कहा कि पूर्णागिरी में उत्तर प्रदेश से ज्यादा श्रद्धालु जाते हैं। मुझे काफी खुशी होती है। अब हम वहां शारदा कॉरिडोर बनाएंगे जिससे वहां सुन्दर घाट होंगे और सौंदर्यीकरण होगा। 'डेस्टिनेशन वेडिंग' और पर्यटन रूप में उत्तराखंड को विकसित किया जा रहा है जिससे लोग विदेश में वैवाहिक और अन्य कार्यक्रम ना कर देवभूमि में करेंगे। राजकाज और सुरक्षा को लेकर विभिन्न कानूनी सुधारों का जिक्र करते हुए मुख्यमंत्री ने कहा, हमने धर्मान्तरण रोधी कानून बनाया। हमने सख्त दंगा रोधी कानून बनाया। साथ ही हमने नकल विरोधी कानून भी बनाया। उन्होंने कहा कि सरकार ने भूमि जिहाद पर कानून बनाया है और 5000 एकड़ भूमि को कब्जा से मुक्त कराया गया है।

माता-पिता के बीच विवाद के कारण नाबालिग से पासपोर्ट रखने का अधिकार नहीं छीना जा सकता

मुंबई (एजेंसी)। बॉम्बे हाई कोर्ट ने कहा है कि माता-पिता के बीच जारी वैवाहिक विवाद के कारण किसी नाबालिग से पासपोर्ट प्राप्त करने और विदेश यात्रा करने का अधिकार नहीं छीना जा सकता। कोर्ट ने बुधवार को यह आदेश दिया, जिसकी प्रति गुरुवार को उपलब्ध कराई गई। अदालत ने पुणे क्षेत्रीय पासपोर्ट कार्यालय को 17 वर्षीय लड़की को दो सप्ताह के भीतर पासपोर्ट जारी करने का निर्देश दिया

और कहा कि विदेश यात्रा का अधिकार संविधान में प्रदत्त मौलिक अधिकार का एक पहलू है। दरअसल, आरपीओ ने नवंबर 2024 में लड़की की मां को एक संदेश भेजा था, जिसमें कहा गया था कि लड़की के पासपोर्ट आवेदन पर कार्रवाई नहीं की जाएगी क्योंकि उसके पिता ने इस पर आपत्ति जताई है। याचिका के अनुसार, लड़की के माता-पिता के बीच तलाक का मुकदमा जारी है। पासपोर्ट कार्यालय के संदेश के जवाब में, लड़की की मां ने पासपोर्ट कार्यालय को बताया कि फॉर्म में पिता की सहमति नहीं थी क्योंकि दंपति के बीच वैवाहिक विवाद है। हाई कोर्ट ने अपने फैसले में कहा कि याचिकाकर्ता लड़की के मूल्यवान संवैधानिक अधिकार को उसके पिता द्वारा अपना अनापत्ति प्रमाण पत्र देने से इनकार करने के केवल एक संदेश के आधार पर उससे छीना नहीं जा सकता।

द एड्रेस कॉलोनी प्रवेश मार्ग का विधि सम्मत हल निकाले-मंत्री श्रीमती गौर

मीडिया ऑडीटर, भोपाल (एजेंसी)। पिछड़ा वर्ग एवं अल्पसंख्यक कल्याण राज्यमंत्री (स्वतंत्र प्रभार) श्रीमती कृष्णा गौर ने कहा है कि गोविंदपुरा क्षेत्र में आने वाली द एड्रेस कॉलोनी प्रवेश मार्ग का विवाद विधिनुसार हल किया जाये। इस संबंध में उन्होंने बुधवार को मंगालय में एसडीएस कोलार, टाउन एण्ड कंट्री प्लानिंग, नगर निगम और रहवासियों के साथ संयुक्त बैठक ली।

मंत्री श्रीमती गौर ने कहा कि 13 जनवरी को सभी पक्ष अपने दस्तावेज के साथ एसडीएम कोलार कार्यालय में उपस्थित होंगे। एसडीएम सभी पक्ष की सुनवाई कर सर्वमान्य और विधि सम्मत हल निकालेगें। मंत्री श्रीमती गौर ने निर्देश दिये है कि नगर निवेशक, नगर निगम तथा टाउन एण्ड कंट्री प्लानिंग के अधिकारी संयुक्त रूप से स्थल भ्रमण भी करें। श्रीमती गौर ने स्पष्ट किया की प्रकरण के निराकरण में सभी पक्षों के हितों का ध्यान रखा जाये।

ऑनलाइन आवेदन अब 24 जनवरी तक होंगे स्वीकार

मीडिया ऑडीटर, भोपाल (एजेंसी)। सामाजिक न्याय एवं दिव्यांगजन सशक्तिकरण विभाग के माध्यम से दिव्यांग विद्यार्थियों के लिए संचालित मुख्यमंत्री निःशक्त शिक्षा प्रोत्साहन योजना के विद्यार्थियों के ऑनलाइन आवेदन अब 24 जनवरी 2025 तक स्वीकार किए जाएंगे।

सामाजिक न्याय एवं दिव्यांगजन सशक्तिकरण विभाग द्वारा संचालित 2024-25 में अध्ययनरत दृष्टिबाधित, श्रवणबाधित, मंदबुद्धि, अस्थिबाधित दिव्यांग विद्यार्थियों के लिए एन.आई.सी. मध्यप्रदेश के सहयोग से स्पर्श पोर्टल पर ऑनलाइन आवेदन स्वीकार किये जाने के लिए अंतिम तिथि 12 नवंबर 2024 निर्धारित की गई थी। विभाग द्वारा जारी नये निर्देशों के अनुसार विद्यार्थी अब योजना का लाभ लेने के लिये 24 जनवरी 2025 तक पोर्टल पर ऑनलाइन आवेदन कर सकेंगे।

योजना के लिए पात्र दिव्यांग विद्यार्थी प्रवेशित संस्था प्रमुख के माध्यम से ऑनलाइन आवेदन के साथ दिव्यांग प्रमाण-पत्र (यू.डी.आई.डी. कार्ड), आधार कार्ड, समग्र आईडी, पूर्व में पास की गई कक्षा की अंक-सूची और राशन कार्ड या आय-प्रमाण पत्र की छायाप्रति ऑनलाइन अपलोड कर योजना का लाभ ले सकेंगे।

साइटिस प्राणी प्रजातियों का अवैध व्यापार करने वाले सरगना कार्तिक गोयल की जमानत याचिका खारिज

मीडिया ऑडीटर, भोपाल (एजेंसी)। साइटिस प्राणी प्रजातियों का अवैध व्यापार करने वाले दिल्ली निवासी मुख्य सरगना कार्तिक गोयल की जमानत याचिका सर्वोच्च न्यायालय नई दिल्ली द्वारा 7 जनवरी को विस्तृत सुनवाई के उपरांत खारिज कर दी गयी है। स्टेट टाइगर स्ट्राइक फोर्स मध्यप्रदेश, भोपाल एवं क्षेत्रीय इकाई इंदौर द्वारा 25 मई, 2024 को दुर्लभ जीवित प्राणी इगुआना एवं एंपरर स्कॉर्पियन को जप्त कर वन्य-जीव संरक्षण अधिनियम के अंतर्गत पुख्ता दस्तावेज प्राप्त होने पर प्रकरण दर्ज किया गया था। उक्त प्रकरण में अग्रिम कार्यवाही करते हुए गिरोह के मुख्य सरगना कार्तिक गोयल को 8 जून, 2024 को गिरफ्तार किया गया था।

सरगना कार्तिक की निशानदेही पर राज्य के बाहर बुलंदशहर उत्तर प्रदेश एवं हैदराबाद तेलंगाना से 40 से अधिक साइटिस प्राणी प्रजातियों को जप्त कर कार्यवाही की गयी। उक्त आरोपी द्वारा सर्वोच्च न्यायालय नई दिल्ली में जमानत याचिका दायर की थी, जिसे न्यायालय द्वारा खारिज कर दिया गया। पूर्व में भी उच्च न्यायालय मध्यप्रदेश द्वारा 3 बार एवं विभिन्न न्यायालयों द्वारा 3 बार आरोपी की जमानत याचिका खारिज की जा चुकी है। आरोपी जिला जेल इंदौर में विगत 6 माह से निरुद्ध है। प्रकरण में विवेचना जारी है।

स्मार्ट मीटर के परफार्मेंस की करें एनालिसिस - ऊर्जा मंत्री श्री तोमर

मीडिया ऑडीटर, भोपाल (एजेंसी)। बिजली उपभोक्ताओं के घरों में लगाये जा रहे स्मार्ट मीटर के परफार्मेंस की एनालिसिस करें। उपभोक्ताओं को स्मार्ट मीटर की विशेषताओं से भी अवगत करायें। उपभोक्ता संतुष्टि में कितना सुधार हुआ है और बिल संबंधी शिकायतों में कितनी कमी आयी है, इसका भी आकलन करें। ऊर्जा मंत्री श्री प्रद्युम्न सिंह तोमर ने यह निर्देश स्मार्ट मीटर लगाने के कार्यों की समीक्षा के दौरान दिये। श्री तोमर ने वर्तमान में एजेंसीवार उपलब्ध स्मार्ट मीटर की संख्या एवं भविष्य के लिये माहवार स्मार्ट मीटर की उपलब्धता की कार्य-योजना के बारे में जानकारी ली। उन्होंने कहा कि स्वीकृत कार्य-योजना अनुसार स्मार्ट मीटर लगाने की कार्यवाही की जाये। ऊर्जा मंत्री श्री तोमर ने कहा कि स्मार्ट मीटर लगाने के कारण कम्पनी को सब्सिडी देने में कितना अंतर आया है, इसकी जानकारी दें। उन्होंने प्रीपेड बिलिंग की कार्य-योजना के संबंध में भी चर्चा की। बैठक में बताया गया कि स्मार्ट मीटरों की स्थापना के बाद बिलिंग दक्षता में लगभग 9 प्रतिशत की बढ़ोत्तरी पायी गयी है। फीडरवार स्मार्ट मीटरिंग का कार्य पूरा होने के बाद एनर्जी ऑडिट की जायेगी। एमडी पूर्व क्षेत्र विद्युत वितरण कम्पनी श्री अनय द्विवेदी, एमडी मध्य क्षेत्र विद्युत वितरण कम्पनी श्री क्षितिज सिंघल और एमडी पश्चिम क्षेत्र विद्युत वितरण कम्पनी सुश्री रजनी सिंह सहित अन्य अधिकारी उपस्थित थे।

जनजातीय कल्याण कार्यक्रम क्रियान्वयन का लक्ष्य अन्त्योदय हो : राज्यपाल

मीडिया ऑडीटर, भोपाल (एजेंसी)। राज्यपाल श्री मंगुभाई पटेल ने कहा है कि जनजातीय कल्याण कार्यक्रम क्रियान्वयन में अन्त्योदय का लक्ष्य रहें। जनजातीय समुदाय की सबसे पिछड़ी जनजाति, उसमें सबसे पिछड़े परिवार को हितलाभ देने में प्राथमिकता दी जाए।

राज्यपाल श्री पटेल ने गुरुवार को पशुपालन, उच्च शिक्षा, वन और जनजातीय कार्य विभाग की क्रमिक रुप से राजभवन में समीक्षा की। बैठक में जनजातीय प्रकोष्ठ के अध्यक्ष श्री दीपक खांडेकर, राज्यपाल के अपर मुख्य सचिव श्री के.सी. गुप्ता भी मौजूद थे।

राज्यपाल श्री पटेल ने जनजातीय कार्य विभाग की समीक्षा में कहा कि प्रधानमंत्री की पहल जनमन कार्यक्रम जनजातीय समुदायों को बुनियादी सुविधाएं उपलब्ध कराने का अभूतपूर्व प्रयास है। जनजातीय परिवार को विकास की मुख्यधारा में जोड़ने का दुर्लभ अवसर है। आवश्यकता संवेदनशीलता के साथ लक्ष्य बनाकर समर्पित भाव से कार्य करने की है। उन्होंने कहा कि जनमन के तहत बनी कार्य-योजना के कार्य समय पर पूरे हों और उनकी गुणवत्ता उत्कृष्ट हो। उन्होंने सिकल सेल के संबंध में चर्चा के दौरान कन्या छात्रावास के रक्त परीक्षण में 78 प्रतिशत लड़कियों में रक्त अल्पता मिलने की जानकारी देते हुए, छात्रावासों में पौष्टिक भोजन के अनुसार मेन्यू तैयार करने की जरूरत बताई। उन्होंने जनमन के तहत संचालित मोबाइल मेडिकल वैन में सिकल सेल जांच और सिकल सेल औषधियों के वितरण की व्यवस्था किए जाने के लिए कहा है। जनजातीय विकासखण्डों के सामुदायिक स्वास्थ्य केन्द्र के परिसर में जन औषधि केन्द्र खोलने और केन्द्र संचालन की पात्रता पूरी करने वाले जनजातीय युवाओं को नियुक्त करने के लिए कहा है।

जनजातीय कार्य मंत्री डॉ. कुंवर विजय शाह ने जनजातीय छात्रावासों के रहवासियों को हेल्थ कार्ड उपलब्ध कराने की बात कही है। बैठक में प्रमुख सचिव जनजातीय कार्य श्री गुलशन बामरा उपस्थित थे। राज्यपाल श्री पटेल ने पशुपालन एवं डेयरी विभाग की समीक्षा के दौरान मुख्यमंत्री दुधारू पशु प्रदाय योजना क्रियान्वयन की जानकारी प्राप्त की। उन्होंने कहा कि योजना का उद्देश्य पी.वी.टी.जी. जनजातियों को सतत आजीविका उपलब्ध कराना है। जरूरी है कि योजना में अति गरीब परिवारों को प्राथमिकता दी जाए। योजना राज्य सरकार के कार्यक्रम के रूप में पृथक से ही संचालित की जाए। किसी अन्य योजना अथवा कार्यक्रम में समावेशन नहीं किया जाए। राज्यपाल को बताया गया कि राजभवन के निर्देशानुसार जनसंख्या के अनुपात में लक्ष्यों का निर्धारण किया गया है। बैगा जनजाति के 30, सहरिया जनजाति के 374 और भारिया जनजाति के 30 हितग्राही परिवारों को 2-2 दुधारू पशुओं से लाभान्वित किया जा रहा है। पशुपालन एवं डेयरी राज्य मंत्री (स्वतंत्र प्रभार) श्री लखन पटेल और प्रमुख सचिव पशुपालन श्री उमाकांत उमराव भी उपस्थित थे।

राज्यपाल श्री पटेल ने उच्च शिक्षा विभाग की समीक्षा में जनजाति प्रतिभाओं के टैलेंट पूल के ऑन एवं ऑफ लाइन सम्मेलनों के आयोजनों की जरूरत बताई है। जनजाति कल्याण योजनाओं केन्द्र सरकार के पोर्टल के साथ विभाग को संबंद्ध होने के लिए कहा है, जिससे योजनाओं के दोहरे लाभ की समस्या उत्पन्न नहीं हो। उन्होंने कहा कि जनजातीय आबादी के मान से विभागीय बजट के प्रावधान के संबंध में विचार किया जाना चाहिए।

विभाग द्वारा जनजातीय युवाओं की खेल प्रतिभा और अभिरुचि के अनुसार केन्द्र सरकार के खेल प्राधिकरण के साथ समन्वय से किसी एक खेल को चयनित कर प्रोत्साहन का प्रयास समग्रता के साथ किया जाए।

स्थानीय उत्पादों को जीआई टैग के जरिए वैश्विक पहचान दिलाने संबंधी कार्यशाला सम्पन्न

मीडिया ऑडीटर, भोपाल (एजेंसी)। स्थानीय उत्पादों को जीआई टैगिंग के जरिए वैश्विक पहचान दिलाने के लिए बुधवार को विंध्याचल भवन स्थित एमएसएमई कार्यालय में कार्यशाला संपन्न हुई। कार्यशाला में प्रमुख रूप से पद्मश्री डॉ. रजनीकांत भी शामिल हुए।

इस अवसर पर उद्योग आयुक्त श्री दिलीप कुमार ने कार्यशाला में शामिल सभी विभागों के अधिकारियों से कहा कि वे जीआई टैगिंग के लिए संभावित और चिन्हित उत्पादों की सूची सांझा करें। पद्मश्री डॉ. रजनीकांत ने जीआई टैगिंग के फायदे, कानूनी प्रकरण, ब्रांडिंग, बाजार विस्तार और जीआई टैगिंग पर अपने अनुभव साझा किए। कार्यशाला में कृषि, मत्स्य पालन, पशुपालन, रेशम उत्पादन जैसी गतिविधियों से जुड़े विभागों के अधिकारियों ने सहभागिता की। इस दौरान जीआई टैगिंग के लिए उत्पादों का चयन और परियोजना कार्यान्वयन के लिए रोड मैप तैयार किया गया।

प्रदेश में जल संरक्षण और संवर्धन के साथ ही जल का हो रहा इष्टतम उपयोग

मीडिया ऑडीटर, भोपाल (एजेंसी)। मध्यप्रदेश सरकार द्वारा जल संरक्षण और जल संवर्धन के साथ ही जल के इष्टतम उपयोग में दक्षता के लिए निरंतर प्रयास किए जा रहे हैं। प्रदेश में दाबयुक्त सिंचाई प्रणाली के जरिए जल के अधिकतम उपयोग से जल के अपव्यय को कम किया गया है। इससे शेष जल का उपयोग सैंच्य क्षेत्र विस्तार, ग्रामीण एवं शहरी पेयजल आपूर्ति तथा अन्य क्षेत्रों में किया जाना संभव हो सकेगा। मोहनपुरा कुंडलियां की प्रेशराइज्ड पाइप प्रणाली की सफलता के बाद पार्वती-कालीसिंध-चंबल नदी जोड़ों परियोजना और केन-बेतवा नदी जोड़ों परियोजना के माध्यम से जल की अधिकता वाले क्षेत्रों से अतिरिक्त जल को सूखा प्रभावित क्षेत्रों में भेजने तथा भण्डारण करने से कृषि और घरेलू उपयोग के लिए जल की उपलब्धता सुनिश्चित की जा सकेगी। जल संसाधन विभाग के सचिव श्री जॉन किंग्सली ए.आर. ने बुधवार को कुशाभाऊ ठाकरे इंटरनेशनल कन्वेंशन सेंटर, भोपाल में आयोजित जल और पर्यावरण पर 3 दिवसीय अंतर्राष्ट्रीय सम्मेलन के प्रारंभ अवसर पर उक्त विचार व्यक्त किए। इस 3 दिवसीय प्रतिष्ठित सम्मेलन का आयोजन अमेरिकन सोसाइटी ऑफ सिविल इंजीनियर्स के पर्यावरण और जल संसाधन संस्थान और मध्यप्रदेश जल संसाधन विभाग एवं अंत्योदय प्रबोधन संस्थान के सहयोग से किया जा रहा है। सम्मेलन का मुख्य विषय है जलवायु परिवर्तन के अनुकूल सतत् और मजबूत जल बुनियादी ढांचे का निर्माण। इसमें विश्व भर से प्रतिष्ठित विशेषज्ञ, पर्यावरणविद, निर्माता और शोधकर्ता भाग ले रहे हैं।

महिला उद्यमिता पर प्रशिक्षण कार्यक्रम प्रारंभ

मीडिया ऑडीटर, भोपाल (एजेंसी)। मेपकास्ट भोपाल में अपना उद्योग स्थापित करने वाली इच्छुक महिलाओं के लिए चार सप्ताह का प्रशिक्षण कार्यक्रम बुधवार को प्रारंभ हुआ।

इस अवसर पर मेपकास्ट के महानिदेशक डॉ. अनिल कोठारी ने प्रशिक्षणार्थियों से विस्तृत चर्चा करते हुए बताया कि उद्योग के क्षेत्र में सफल होने के लिए मूलभूत आवश्यकता होती है, अपनी रूचि के अनुसार चयनित इकाई को कार्यरूप दिया जाये। उन्होंने कहा कि वर्तमान में महिला उद्यमियों के लिए अपार अवसर है। डॉ. कोठारी ने कहा कि प्रधानमंत्री रोजगार सृजन योजना ओर मुद्रा योजना ऐसी योजनाएं हैं, जिनमें कम पूंजी में उद्योगों की सफल स्थापना की जा सकती है। प्रशिक्षण में शामिल हुई, प्रशिक्षाणार्थियों ने इस कार्यक्रम से अपनी अपेक्षा पर डॉ. कोठारी से चर्चा की। उद्यमिता महिलाओं की जिज्ञासाएं मुख्यत: इकाई का चयन एवं बाजार से संबंधित रही।

वरिष्ठ प्रधान वैज्ञानिक एवं प्रमुख मानव संसाधन मेपकास्ट डॉ. प्रवीण कुमार दिघर्रा ने प्रशिक्षणार्थियों को अवगत कराया कि इकाई का चयन करते समय अपनी रूचि के साथ अनुभव एवं पारिवारिक पृष्ठभूमि को अवश्य महत्व दें। प्रोजेक्ट विशेषज्ञ डॉ. जी.एस. जरियाल ने प्रशिक्षण-सत्र की शुरूआत की। उन्होंने प्रशिक्षणार्थियों को इकाई स्थापना की प्रक्रिया के विभिन्न चरणों से अवगत कराया। सलाहकार श्री अवनीश शर्मा एवं सुश्री नव्या चतुर्वेदी ने कार्यक्रम का संचालन किया।

जॉय-राइड पर दिव्यांग बच्चे पहुंचे इंदौर

मीडिया ऑडीटर, भोपाल (एजेंसी)। सामाजिक न्याय एवं दिव्यांगजन सशक्तीकरण विभाग की पहल पर जबलपुर के 5 दिव्यांग बच्चों की जॉय-राइड की इच्छा आज पूर्ण हुई। यह बच्चे जबलपुर से इंडिगो की उड़ान से इंदौर पहुंचे हैं। इन बच्चों को जबलपुर एयरपोर्ट पर मध्यप्रदेश उच्च न्यायालय के मुख्य न्यायाधीश श्री सुरेश कुमार कैत ने हवाई टिकिट प्रदान कर रवाना किया। ये सभी बच्चे इंदौर शहर का भ्रमण करेंगे। इस दौरान बच्चे इंदौर के राजवाड़ा और चिड़िया घर का भ्रमण करेंगे, 56 दुकान के पकवानों का जायका लेंगे और खजराना गणेश मंदिर में दर्शन करेंगे। हवाई यात्रा में आने-जाने के दौरान इन बच्चों का ध्यान रखने के लिये 2 शिक्षक, 2 अभिभावक और 2 जे.जे.सी. सदस्य साथ हैं।

न्यायिक एकेडमी जबलपुर में आयोजित दिव्यांग बच्चों की सुरक्षा के लिये आयोजित संवाद'' कार्यक्रम में न्यायमूर्ति श्री आनंद पाठक एवं किशोर न्यायालय सचिव की उपस्थिति में दिव्यांग बच्चों ने फ्लाइट द्वारा यात्रा की मंशा जाहिर की थी। उनकी इस इच्छा को पूर्ण करने के लिये सामाजिक न्याय विभाग द्वारा दिव्यांग बच्चों को हवाई यात्रा करायी जा रही है। इन बच्चों में सोनिया रखिया, प्रिया जैन, अमर, पंचमलाल पटेल और मंयक दुबे शामिल है।

दुग्ध उत्पादकों की आय दोगुना करने राज्य सरकार ने उठाया महत्वपूर्ण कदम

मीडिया ऑडीटर, भोपाल (एजेंसी)। मुख्यमंत्री डॉ. मोहन यादव ने कहा है कि प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी के कुशल नेतृत्व में आज हमारा देश विश्व में दुग्ध उत्पादन के क्षेत्र में पहले स्थान पर और मध्यप्रदेश देश में तीसरे स्थान पर है। देश के दुग्ध उत्पादन में 57.62त्न की वृद्धि हुई है और यह विश्व रिकॉर्ड है। मुख्यमंत्री डॉ. यादव ने बताया कि प्रदेश में दुग्ध उत्पादन का औसत 673 ग्राम प्रति व्यक्ति है, जबकि राष्ट्रीय औसत 471 ग्राम से अधिक है। मुख्यमंत्री डॉ. यादव ने बताया कि राज्य सरकार ने भी प्रधानमंत्री श्री मोदी के विजन के अनुसार ही प्रदेश के दुग्ध उत्पादकों की आय दोगुना करने एवं दुग्ध उत्पादन को बढ़ावा देने के उद्देश्य से एम.पी. स्टेट को-ऑपरेटिव डेयरी फेडरेशन लिमिटेड एवं संबद्ध दुग्ध संघों तथा राष्ट्रीय डेयरी विकास बोर्ड (एनडीडीबी) के बीच सहकार्यता अनुबंध (कोलेबोरेशन एग्रीमेंट) किया गया है। इसे मंत्रि-परिषद ने भी मंजूरी दे दी है। अनुबंध की अवधि 5 वर्ष होगी, जिसका आपसी सहमति से विस्तार किया जा सकेगा। मुख्यमंत्री डॉ. यादव ने बताया कि अनुबंध के तहत मुख्य रूप से प्रत्येक ग्राम पंचायत में कलेक्शन सेन्टर स्थापित किए जाएंगे, दुग्ध संघों की प्रोसेसिंग क्षमता में वृद्धि की जायेगी तथा दुग्ध समितियों की संख्या 6 हजार से बढ़ाकर 9 हजार की जायेगी। मुख्यमंत्री ने उम्मीद जाताई कि इस सबके परिणामस्वरूप दुग्ध उत्पादकों की कुल वार्षिक आय 1700 करोड़ रूपये से बढ़कर दोगुना से भी अधिक (3500 करोड़ रूपये) हो जाएगी। मध्यप्रदेश देश का डेयरी कैपिटल बन जाएगा।

मुख्यमंत्री डॉ. यादव ने बताया कि राज्य सरकार का संकल्प है कि प्रदेश में दूध की खरीद सुनिश्चित करने एवं डेयरी किसानों को दूध की सही कीमत दिलाने में मदद के लिए प्रत्येक ग्राम पंचायत में डेयरी सहकारी समिति एवं कलेक्शन सेंटर खोले जाएंगे। श्वेत क्रांति मिशन के अंतर्गत ढाई हजार करोड़ रूपये के निवेश से प्रत्येक जिले में सांची डेयरी के साथ मिल्क कूलर, मिनी डेयरी प्लांट एवं चिलिंग सेंटर की संख्या में वृद्धि की जाएगी। मुख्यमंत्री ने कहा कि इन संकल्पों को पूरा करने में एनडीडीबी के साथ हुआ अनुबंध महत्वपूर्ण साबित होगा। यह राज्य के पशुपालन एवं डेयरी विभाग के अंतर्गत सहकारी प्रणाली और सांची ब्रांड को मजबूत करेगा। मुख्यमंत्री डॉ. यादव ने बताया कि दूध की खरीद सुनिश्चित करने एवं सही कीमत दिलाने में मदद के लिए प्रत्येक ग्राम पंचायत में कलेक्शन सेन्टर स्थापित किए जाएंगे। वर्तमान में प्रदेश में दुग्ध समितियों की संख्या 6 हजार है, जिसे बढ़ाकर 9 हजार किया जाएगा। एक दुग्ध समिति लगभग 1 से 3 गांव में दुग्ध संकलन करती है, 9 हजार दुग्ध समितियां के माध्यम से लगभग 18 हजार ग्रामों को कवर किया जा सकेगा। दुग्ध संकलन भी 10.50 लाख किलोग्राम प्रतिदिन से बढ़कर 20 लाख किलोग्राम प्रतिदिन माध्यम से कवर किए गए गांव की संख्या 1390 से बढ़ाकर 2590 की जाएगी तथा दूध की खरीद को 1.3 लाख किलोग्राम से बढ़ाकर 3.7 लाख किलोग्राम प्रतिदिन किया जाएगा। दुग्ध संघों की प्रोसेसिंग क्षमता में वृद्धि की जायेगी। वर्तमान में डेयरी प्लांट की क्षमता 18 लाख किलोग्राम प्रतिदिन है, जिसे बढ़ाकर 30 लाख किलोग्राम प्रतिदिन किया जाएगा।

उपभोक्ताओं को सतत विद्युत आपूर्ति सुनिश्चित करें-ऊर्जा मंत्री श्री तोमर

मीडिया ऑडीटर, भोपाल (एजेंसी)। ऊर्जा मंत्री श्री प्रद्युम्न सिंह तोमर ने पश्चिम क्षेत्र विद्युत वितरण कम्पनी के कार्यों की गहन समीक्षा की। उन्होंने निर्देशित किया कि उपभोक्ताओं को सतत विद्युत आपूर्ति सुनिश्चित करें।

मंत्री श्री तोमर ने कहा कि तकनीकी एवं वितरण हानियाँ कम करें। उन्होंने कहा कि मीटर रीडिंग के आधार पर बिजली बिल दें। आकलित खपत के आधार पर बिल देने की प्रक्रिया रोकी जाये। आदतन बिजली बिल नहीं जमा करने वाले उपभोक्ताओं से वसूली सुनिश्चित करें।

मंत्री श्री तोमर ने वृत्तवार जले एवं खराब ट्रांसफार्मर की समीक्षा की। उन्होंने कहा कि नियमानुसार समय-सीमा में ट्रांसफार्मर बदले जायें।

इसी तरह खराब घरेलू मीटर भी शीघ्र बदलें। साथ ही मीटर खराब होने के कारण भी पता करें। मंत्री श्री तोमर ने नवीन विद्युत कनेक्शन के लंबित प्रकरणों की समीक्षा की। उन्होंने प्रकरणों के लंबित होने पर नाराजगी व्यक्त करते हुए कहा कि सभी लंबित कनेक्शन पात्रतानुसार समय-सीमा में दें। उन्होंने कहा कि स्मार्ट मीटर के बारे में लोगों को जागरूक किया जाये। उपभोक्ताओं की समस्याओं का त्वरित निराकरण होना चाहिये। समस्याओं के निराकरण के बाद फीडबैक लेना भी जरूरी है। एमडी पश्चिम क्षेत्र विद्युत वितरण कम्पनी सुश्री रजनी सिंह ने कम्पनी द्वारा किये जा रहे कार्यों की विस्तार से जानकारी दी। इस दौरान विभागीय अधिकारी उपस्थित थे।

ढाबे के कमरे मिले दो नाबालिगों के शव

ढाबे की पहली मंजिल पर बना था रूम, मालिक ने जताई हत्या की आशंका

मीडिया ऑडीटर, सिंगरौली निप्र। सिंगरौली जिले के बरगवां थाना क्षेत्र में संचालित एक ढाबे में दो नाबालिग कर्मचारी के शव आज सुबह ढाबे की पहली मंजिल पर बने एक कमरे में पाए गए हैं। दोनों नाबालिग बैगा परिवार से आते हैं और वह इस ढाबे में काम करते थे। बरगवां थाना पुलिस पूरे मामले की जांच में जुटी हुई है।

थाना प्रभारी शिवपूजन मिश्रा ने बताया कि बरगवां थाना क्षेत्र के नेशनल हाईवे में गोंदवाली गांव के पास बने केजीएफ फैमिली रेस्टोरेंट के दो कर्मचारी मिथुन बैगा (16) और बबुंदर बैगा (15) इस रेस्टोरेंट पर काम करके रात में खाना खाकर होटल के पहले मंजिल पर बने सर्वेंट क्वार्टर में जाकर सो गए।

आज सुबह 8 बजे जब होटल खोलने के लिए इन्हें बुलाया गया तो यह दोनों नहीं उठे। ढाबा के मालिक मानसिंह वैस ने जब उनके कमरे पर जाकर देखा तो यह दोनों औंधे मुंह जमीन पर लेटे हुए थे। शंका होने पर होटल के मालिक ने मोबाइल से पुलिस थाने में इसकी सूचना दी। इस सूचना के आधार पर मौके पर पहुंच कर हमने घटनास्थल की जांच की है।

दम घुटने से मौत की आशंका

थाना प्रभारी ने बताया कि घटनास्थल देखकर ऐसा लगता है जैसे दम घुटने से दोनों की ही मौत हुई होगी हालांकि इसमें हत्या की मुख्य वजह पोस्टमॉर्टम रिपोर्ट आने के बाद भी होगी। क्योंकि मृतकों के शरीर पर किसी भी तरह कोई चोट या फिर संघर्ष के निशान नहीं है।

ढाबा मालिक को हत्या का अंदेशा: हालांकि होटल के मालिक ने हत्या की आशंका जताई है। उनका कहना है कि अभी कुछ दिन पहले ही बरगवां थाना क्षेत्र में कोयल कबाड़ की चोरी करने वाले कुछ लोगों से इन दोनों कर्मचारियों का झगड़ा हुआ था। उन्होंने जान से मारने की धमकी भी दी थी। जिसकी शिकायत बरगवां थाने में पहले ही दर्ज कराई गई है। संभवत उन्हें लोगों ने उनकी हत्या की होगी।

कांग्रेस ने सरकार को घेरा: कांग्रेस नेता और जिला पंचायत सदस्य अशोक सिंह पैगाम भी मृतक के परिजनों से मिलने पहुंचे थे और उन्होंने जिले की कानून व्यवस्था पर सवाल खड़ी किए हैं। उनका कहना है कि जिले में लगातार अपराध का ग्राफ बढ़ रहा है और पुलिस प्रशासन उसे पर अंकुश नहीं लग पा रही है।

चोरी के आरोप में नाबालिग सहित युवक गिरफ्तार

ढाई लाख के गहने बरामद, हाउसिंग बोर्ड कॉलोनी में की थी वारदात

मीडिया ऑडीटर, सीधी निप्र। सीधी जिले की जमोड़ी पुलिस ने गुरुवार को चोरी के आरोप में एक नाबालिग सहित युवक को गिरफ्तार किया है। दोनों ने 5 जनवरी को हाउसिंग बोर्ड प्रियदर्शनी कॉलोनी के सूने में मकान में चोरी करना स्वीकार किया है। पुलिस ने इनके पास से ढाई लाख के गहने बरामद किए हैं।

सूने घर में की थी चोरी: थाना प्रभारी विशाल शर्मा ने बताया कि बसंती कोल (55) ने रिपोर्ट दर्ज कराई थी कि मैं 1 जनवरी को अपनी बहन के साथ राजगढ़ हिनौती गई थी। 5 जनवरी को दोपहर 12 बजे घर आई तो देखा बाहर के गेट का ताला बंद था। लेकिन अंदर घर का ताला टूटा था। अलमारी, दीवान खुला मिला। कपड़े, बर्तन बिखरे हुए थे। बक्से में रखी चांदी की पायल, करधन, सोने के झुमके, मंगलसूत्र, चेन, जोधा वाली अंगूठी और जेंट्स की अंगूठी, महाराष्ट्रीयन लॉकिट गायब था।

पुलिस ने संदेही बबलू उर्फ चुनिया (20) निवासी वार्ड 10 दक्षिण करौंदिया सहित एक नाबालिग को हिरासत में लिया। पूछताछ में इन्होंने चोरी करना स्वीकार किया। इनके पास से 2 लाख 50 हजार का सामान जब्त किया गया है।

फ्लाई ऐश डंप करने का विरोध, खजुरिहा के ग्रामीण करेंगे आंदोलन, 7 दिन का दिया प्रशासन को अल्टीमेटम

मीडिया ऑडीटर, सीधी निप्र। सीधी के जेपी पवार प्लांट निगरी की ओर से ग्राम पंचायत खजुरिहा में एक निजी कंपनी ने सड़क निर्माण के लिए पत्थर निकाला था। जिससे वहां पर एक तालाब निर्मित हो गया है। जिसमें हमेशा जल भरा रहता है। जिसकी वजह से वहां पर आदिवासी किसान अपनी सैकड़ों एकड़ कृषि भूमि की सिंचाई करते हैं। ग्राम पंचायत खजुरिहा में दूसरा कोई जलाशय या तालाब न होने से ग्रामवासी इस तालाब का उपयोग अन्य सामाजिक कार्यों और पेय जल और पशुओं को पानी पीने के लिए किया जाता है। लेकिन फिर भी ग्राम पंचायत के बिना अनुमति के वहां फ्लाई ऐस डालने का कार्य फैक्ट्री प्रबंधन कर रहा है। जबकि ग्राम पंचायत की ओर से ग्रामसभा में ग्रामवासियों की उपस्थिति में प्रस्ताव पारित कर फ्लाई ऐश डालने का विरोध कर सीधी कलेक्टर को 2 माह पहले आवेदन भी दे चुकी है। इसमें जेपी पवार प्लांट को दी गई अनुमति निरस्त कर फ्लाई ऐश फिलिंग बंद कराए जाने की मांग की गई थी। प्रशासन की ओर से कोई कार्रवाई नहीं की गई।

जेपी पवार प्लांट की ओर से तालाब का पानी निकाल कर फ्लाई ऐश डालने के कारण गुरुवार के दिन प्रदर्शन किया गया। सीधी कलेक्टर स्वरोचिस सोमवंशी को सरपंच के साथ सैकड़ों आदिवासी किसान ने ज्ञापन देकर कहा है कि अगर 7 दिवस के अंदर कंपनी को फ्लाई ऐश डालने की अनुमति निरस्त नहीं की जाती है तो सभी आदिवासी किसान और ग्रामीण उग्र आंदोलन करेंगे।

जांच के बाद करेंगे कार्रवाई: सीधी कलेक्टर ने बताया की सरपंच और लोगों की ओर से आवेदन दिया गया है, जिस पर हमने जांच के लिए संबंधित एसडीएम और तहसीलदार को निर्देशित कर दिया है। जांच के बाद प्रतिवेदन के आधार पर नियमानुसार कार्रवाई की जाएगी।

मुख्यालय से नही, रीवा-प्रयागराज से कार्यालय चला रहे अधिकारी

मीडिया ऑडीटर, त्योंथर निप्र। त्योंथर विधायक सिद्धार्थ तिवारी लगातार लोगों के बीच में रहकर लोगों की समस्याओं को दूर करने में कोई कसर नहीं छोड़ रहे हैं पर त्योंथर तहसील के विभिन्न विभागों के परगना अधिकारी भी मसूबे में पानी फेरने में कोई कसर नहीं छोड़ छोड़ रहे हैं ऐसा हम नहीं त्योंथर विधानसभा की जनता कह रही क्योंकि मंगलवार को जनसुनवाई के अलावा किसी भी विभाग के विभागीय अधिकारी कार्यालय में नहीं मिलेगा या तो रीवा या प्रयागराज से शाखा चला है अगर कोई भी व्यक्ति संपर्क किया तो फील्ड में रहने की जानकारी दे दी जाती है जबकि रीवा और प्रयागराज रोड में लगे टोल प्लाजा से अगर वाहन आने जाने के फुटेज निकाली जाए तो दूध का दूध और पानी का पानी निकल जायेगा।

वही त्योंथर तहसील की जनता भी मंगलवार के अलावा अगर किसी भी दिन अपनी समस्या लेके आती तो है पर निदान नहीं हो पाता क्योंकि साहब मुख्यालय के कार्यालय में नहीं रीवा या प्रयागराज में रहते हैं और समस्याओं का पुलिंदा लिए इस कड़ाके की ठंडी में जनता भी थकी हारी शाम को घर लौट जाती है और फिर विधायक सिद्धार्थ तिवारी जी की मंगलवार के जनसुनवाई का इंतजार करने लगती है पर सवाल ये है कि क्या मुख्यालय में ना रहने की जिला के विभिन्न विभागों के वरिष्ठ अधिकारियों के द्वारा अलग से छूट दी गई है।

रेलवे ट्रैक पार कर स्कूल जाते छात्र

जिला पंचायत सदस्य ने सीधी सांसद को लिखा पत्र, बोले- सीएम को ज्ञापन सौंप चुका हूं

मीडिया ऑडीटर, शहडोल निप्र। शहडोल ब्यौहारी के देवगांव में स्कूल के अभाव में बच्चों को रेलवे लाइन पार करना पढ़ने के लिए जाना पड़ रहा है। इस समस्या का हर दिन हरिजन बस्ती के बच्चे सामना करते हैं। हाल ही में गांव के ही एक ग्रामीण ने इसका वीडियो बनाकर सोशल मीडिया में वायरल किया है। जिसके बाद स्थानीय स्तर पर जनप्रतिनिधियों ने ओवर ब्रिज बनाने की मांग की है। ग्रामीण सुरेश ने बताया बस्ती के समीप से रेलवे लाइन गुजरी है, स्कूल जाने के लिए छात्र-छात्राएं पटरी पार कर स्कूल जाते हैं। कभी भी कोई बड़ी दुर्घटना हो सकती है। स्थानीय नेताओं ने कई बार पत्राचार किया है की बस्ती के अंदर ही स्कूल का निर्माण करवा दिया जाए। पटरी पार करने के लिए कोई पुल बनवा दी जाए, लेकिन जवाबदार इस ओर कोई ध्यान नहीं दे रहे हैं।

दर्जनों परिवार के बच्चे जाते हैं स्कूल: जिले के ब्यौहारी के देवगांव बस्ती में दर्जनो परिवार कई वर्षों से रहकर इस समस्या को झेल रहा है, स्थानीय लोगों का कहना है कि पटरी पार कर बच्चों को स्कूल जाना पड़ रहा है। स्थानीय लोगों ने इस मामले को लेकर कई बार अधिकारियों को ज्ञापन दिया है, लेकिन इस समस्या का समाधान अब तक नहीं निकला गया है। जिससे बच्चों की जान आए दिन खतरे में रहती।

जिला पंचायत संदस्य ने सीधी सांसद को लिखा पत्र: जिला पंचायत सदस्य पुष्पेंद्र सिंह पटेल ने बताया कि सीधी सांसद को पत्र लिखकर देवगांव में स्कूल खोलने की मांग रखी है। इस मुद्दे को लेकर मैं मुख्यमंत्री को भी ज्ञापन देकर इस समस्या से लोगों को निजात दिलाने की मांग की थी, लेकिन अभी तक इसका निराकरण नहीं हो सका है। यहां दर्जनों परिवार वर्षों से गुजर बसर कर रहे हैं और कई वर्षों से इसी प्रकार बच्चे पटरी पार कर स्कूल जाते हैं।

लूट के दो आरोपी हुए गिरफ्तार, पुलिस ने 2 पिस्टल 7 कारतूस भी बरामद किए

मीडिया ऑडीटर, पन्ना निप्र। अमानगंज थाना पुलिस और पुलिस सायबर सेल की संयुक्त टीम ने गुरुवार को दो अलग-अलग थाना क्षेत्रों में गोली मारकर लूट के मामले में दो आरोपियों को गिरफ्तार किया है। पुलिस ने आरोपियों के पास से 2 पिस्टल और 7 कारतूस, सोने चांदी के जेवरात और नकदी बरामद भी बरामद किए हैं। पन्ना पुलिस अधीक्षक धर्मराज मीणा ने प्रेस कॉन्फ्रेंस कर मामले का खुलासा किया है।

जानकारी के अनुसार, 7 जनवरी 2025 को फरियादी पवन पटेल पिता रूपलाल पटेल निवासी ग्राम बमोरी ने चौकी हरदुआ थाना सिमरिया में रिपोर्ट दर्ज कर बताया था कि 06-07 जनवरी की दरमियानी रात खाना-पीना करके सो रहे थे। इसी दौरान रात में दो अज्ञात नकाबपोश व्यक्तियों ने घर मे घुसकर लूट की वारदात को अंजाम दिया था। पिता रूप लाल के गोली मारकर घायल कर दिया था। बदमाश घर में रखे नकदी और सोने चांदी के जेवर लूट ले गए थे। फरियादी की रिपोर्ट पर थाना सिमरिया में मामला दर्ज किया गया था। पन्ना पुलिस अधीक्षक ने मामले में आरोपियों को गिरफ्तार करने के लिए निर्देश दिए थे।

इसी प्रकार एक अन्य मामले में बीते 26 दिसंबर 2024 को अमानगंज थाना क्षेत्र में फरियादी जीतेन्द्र कुशवाहा पिता बद्री कुशवाहा ने अमानगंज थाना में रिपोर्ट दर्ज करवाया था। वह दोपहर में खेत की रखवाली करते समय 02 व्यक्तियों ने कट्टे से फायरिंग कर मेरी बाइक लूट कर ले गए। दोनों मामले को 2 आरोपियों ने अंजाम दिया था। जिसमें अमानगंज थाना पुलिस और साइबर सेल की टीम ने तारा टेक के पास से घेराबंदी करके 02 संदेही व्यक्तियों गिरफ्तार कर पूछताछ की।

जिन्होंने अपने अपने नाम मनोज पिता राम सेवक कुशवाहा (33) निवासी सकतपुरा थाना अमानगंज,सोनू उर्फ रावेंद्र पिता हलकाई कुशवाहा(20) निवासी इटवा मड़ैय्यन थाना कोतवाली बताया। दोनों लूट घटनाओं को भी स्वीकार किया। पुलिस ने आरोपियों के कब्जे से 02 देशी पिस्टल 07 जिंदा कारतूस, एक बाइक और सोने-चांदी के जेवरात जब्त कर आरोपियों को न्यायालय में पेश कर जेल भेज दिया है।

छतरपुर के कृषि विकास कार्यालय में हुई मारपीट

पार्किंग को लेकर हुआ विवाद, चपरासी बोला- बात करने गया था, उन्होंने मारा

मीडिया ऑडीटर, छतरपुर निप्र। छतरपुर में गुरुवार को कृषि विकास कार्यालय में मारपीट और गाली-गलौज करने का मामला सामने आया है। घटना मंगलवार दोपहर 1 बजे की बताई जा रही है, जिसमें कृषि विकास कार्यालय के अधिकारी और सहायक भूमि संरक्षण कार्यालय के चपरासी आपस में भिड़ गए। घटना के बाद गुरुवार को सहायक संचालक ने संबंधित अधिकारी व एसपी को शिकायत दर्ज कराई है। वहीं चपरासी ने भी सिटी कोतवाली थाने में मारपीट की शिकायत दर्ज कराई है। पुलिस ने मामला दर्ज कर जांच शुरू कर दी है।

ये है मामला: कृषि विभाग के सहायक संचालक आर.के सिंह ने 18 दिसंबर को अकाउंटेंट पान खां को बाहरी व्यक्तियों की गाड़ी खड़ी करने और कार्यालय में बैठने से मना किया था। इसके बाद से अकाउंटेंट ने बाहरी लोगों को ऑफिस के सामने गाड़ी खड़े करने और अंदर आने से मना कर दिया। इस बात से नाराज सहायक भूमि संरक्षण कार्यालय का चपरासी मोहम्मद इश्हाक मंगलवार 7 जनवरी को दोपहर करीब 1 बजे आर.के सिंह के ऑफिस पहुंचा और गाड़ी खड़ी करने पर बहस करने लगा। विवाद बढ़ने पर कृषि विकास कार्यालय के चपरासी लखन कुशवाहा ने मोहम्मद इश्हाक को कार्यालय से बाहर निकालने की कोशिश की। जब वो नहीं माना तो लखन ने सहायक संचालक सुरेश पटेल को बुलाया।

एक दूसरे पर लगाए आरोप: सहायक संचालक आर.के सिंह का कहना है कि मो. इश्हाक दुसरे कार्यालय में काम करते हैं लेकिन पूरे दिन उनके कार्यालय में बैठे रहते हैं। इससे कार्यालय की गोपनीयता भी भंग हो रही थी। इसके बारे में उन्हें कई बार शिकायतें भी मिली थीं। इसलिए उन्होंने बाहरी व्यक्तियों को कार्यालय में जमा होने देने से मना किया था। इसी बात से नाराज होकर मो. इश्हाक ऑफिस में आकर गाली गलौज करते हुए मारपीट करने लगा।

वहीं मोहम्मद इश्हाक का कहना है कि वो सहायक संचालक आर.के. सिंह के चैम्बर में बात करने गया था। तभी आर.के. सिंह उसे कार्यालय से बाहर निकलने के लिए बोलने लगे। इसी दौरान सहायक संचालक सुरेश पटेल और आर.के. सिंह ने उसे कमरे में बंद कर लात-घूंसों से पीटा।

मामले की जांच कर रहे हैं- अरविंद कुजूर: सिटी कोतवाली थाना प्रभारी अरविंद कुजूर ने कहा कि मो. इश्हाक की शिकायत पर आर.के. सिंह और एस. के. पटेल के खिलाफ मामला दर्ज कर जांच की जा रही है।

ग्राम पंचायत पताई में श्रीराम कथा का भव्य आयोजन

मीडिया ऑडीटर, रीवा निप्र। लालगांव क्षेत्र अंतर्गत ग्राम पताई में राम कथा रूपी अमृत वर्षा पूज्य महाराज पवन द्विवेदी जी के मुखारविंद से प्रवाहित हो रही है। आसपास के ग्राम पंचायत की जनता पहुंचकर कथा का श्रवण कर रही है। यह राम कथा का आयोजन समस्त ग्राम वासियों द्वारा किया जा रहा है। बृहस्पतिवार को कथा का अंतिम दिवस पर पूज्य महाराज जी द्वारा राम जी के अयोध्या पहुंचने पर भरत मिलाप पर प्रसंग कर सभी ग्रामीण जनों का भाइयों के प्रति प्रेम का मार्गदर्शन दिया। कांग्रेस पार्टी के पूर्व राज्यसभा सांसद राजमणि पटेल, सहित सामाजिक कार्यकर्ता देवेंद्र तिवारी, रविकांत अग्निहोत्री, एड विनोद मिश्रा, जनपद सदस्य ममता अशोक सिंह, ग्राम पताई के सुधीर तिवारी ने कथा का श्रवण किया। साथ ही आयोजकों में मुख्य भूमिका सुनील तिवारी, गोलू तिवारी, दिवाकर तिवारी, दिनेश सिंह पनगड़ी, ज्ञानीष सिंह, पुरुषोत्तम पांडे, राकेश तिवारी, जनार्दन सिंह पताई सहित सभी ग्रामीण जनों का महत्वपूर्ण योगदान रहा। शुक्रवार को भंडारे का आयोजन किया गया है। जिस पर आयोजक सदस्य सुधीर तिवारी सहित अशोक सिंह द्वारा आम जनमानस से भंडारे में पहुंचकर प्रसाद ग्रहण करने का अनुरोध किया है।

जनभागीदारी बैठक में उठा कुसमी कॉलेज मेंटेनेंस का मुद्दा

धौहनी विधायक ने व्यक्त की नाराजगी, ठेकेदार से बोले- 14 जनवरी तक काम हो पूरा

मीडिया ऑडीटर, सीधी निप्र। सीधी जिले के कुसमी ब्लॉक अंतर्गत निर्माणाधीन भवन की गुणवत्ता में लापरवाही की शिकायत एसडीएम और विधायक को मिल रही थी। लेकिन विभाग और निर्माण एजेसियों ने इसे गंभीरता से नहीं लिया। इस पर कुसमी में गुरुवार के दिन जनभागीदारी की बैठक हुई।

जहां पर धौहनी विधायक कुंवर सिंह टेकाम और एसडीएम कुसमी प्रिया पाठक के साथ जिला पंचायत सदस्य हीराबाई सिंह मौजूद थी। इस दौरान खराब काम करने पर ठेकेदार को उन्होंने फटकार भी लगाई है।

उन्होंने कहा कि 14 जनवरी तक महाविद्यालय में इन सभी का मेंटनेंस दुरुस्त हो जानी चाहिए। नहीं तो ठेकेदार का एग्रीमेंट निरस्त कर दूसरे ठेकेदार को दे दिया जाएगा। इसके अलावा दूर से आने वाले छात्रों के लिए एसडीएम को बस का पास बनाए जाने के लिए भी बातें रखी हैं।

बैठक में महाविद्यालय के मूलभूत सुविधाओं के संबंध में चर्चा की गई। जिसमें पानी, बिजली, महाविद्यालय में फीस सहित कई मुद्दों को शामिल किया गया था। जिसके बाद विधायक मद से विधायक ने अपनी राशि भी देने के लिए स्वीकृति जाहिर की।

विज्ञान और कॉमर्स विषय की पढ़ाई होगी शुरू: बैठक में महाविद्यालय कुसमी में अभी आर्ट विषय की पढ़ाई होती थी। जिससे छात्रों की संख्या में इजाफा नहीं हो रहा है। इसकी वजह से उच्च शिक्षा के लिए सीधी या फिर अन्य जगह जाना पड़ता है।

अब विधायक कुंवर सिंह टेकाम ने दो अन्य संकाय विज्ञान और कॉमर्स चालू कराने के लिए प्रस्ताव भी पारित किया है।

सड़क सुरक्षा माह में हेलमेट और सीट बेल्ट की सघन जांच की गई

मीडिया ऑडीटर, मनगवा निप्र। प्रदेश में सड़क सुरक्षा माह मनाया जा रहा है।जिसमे परिवहन विभाग रीवा ने रीवा मनगवा मुख्य मार्ग के साथ नए बस स्टैंड के पास हेलमेट और सीट बेल्ट की सघन जांच की गई।जांच में जिन चालको ने हेलमेट लगाया हुया था उन्हें रीवा आरटीओ ने पेन देकर पुरस्कृत किया और जिन्होंने हेलमेट नहीं लगाया हुया था उन पर चालानी कार्यवाही कर उन्हें समझाइस भी दी गई की आप हेलमेट के बिना वाहन चालन नहीं करेंगे और जांच में यह सपथ भी दिलाई गई की आप पाँच लोगो को हेलमेट लगाने के लिए जागरूक करेंगे। जाँच के दौरान ऑटो ई- रिक्शा की भी जाँच की गई। जिसमें नम्बर प्लेट और लाइट इंडिकेटर और तीन सवारी से ज्यादा सवारियोंका परिवहन न किया जाय इस बात की विशेष जाँच की गई। जाच में ट्रक और बस एसोसिएशन के भी पदाधिकारी मौजूद रहे।इस जांच में आर टी ओ रीवा के साथ परिवहन सुरक्षा स्क्वाड प्रभारी और परिवहन स्टाफ शामिल रहा।

विचार

विश्व में धर्म प्रेरित घृणा का जिम्मेदार कौन?

बीते दिनों विश्व के अलग-अलग कोने से कई हिंसक घटनाएं सामने आईं। मैं बिना किसी टिप्पणी के इन्हें सुधी पाठकों के साथ सांझा कर रहा हूं। अब वे स्वयं निष्कर्ष निकालें कि आखिर क्यों 21वीं सदी में भी धर्म के नाम पर हिंसा होती है? इसके पीछे की मानसिकता क्या है? क्या यह कभी समाप्त हो सकती है? यदि हां, तो कैसे? अमरीका के न्यू आर्लियंस स्थित बोरबान स्ट्रीट्स में नए वर्ष का जश्न मना रहे लोगों पर 1 जनवरी को तड़के 3.15 बजे शम्सुद्दीन जब्बार ने ट्रक चढ़ा दिया। इसमें कुल 15 लोगों की मौत हो गई, जबकि 35 से अधिक लोग घायल हो गए। मासूमों की जान लेने वाले शम्सुद्दीन को पुलिस ने मुठभेड़ के दौरान मार गिराया।

बोरबान स्ट्रीट शहर के फ्रैंच क्वार्टर में ऐतिहासिक पर्यटन स्थल है, जहां उसके संगीत एवं बार की वजह से काफी भीड़ जुटती है। नरसंहार करने पर आमादा शम्सुद्दीन ने भीड़ की ओर अपना वाहन मोड़ दिया और लोगों को रौंदते हुए निकल गया।

बकौल अमरीकी मीडिया, आतंकवादी शम्सुद्दीन जब्बार स्टाफ सार्जेंट के तौर पर अमरीकी सेना में सेवा भी दे चुका था। वह वर्ष 2007-15 में अफगानिस्तान में तैनात था और उसे सेना में साहसिक कार्यों के लिए मान-सम्मान भी मिला था। वह आई.टी. विशेषज्ञ भी था। हमले से पहले अपने द्वारा जारी एक वीडियो में जब्बार, आतंकी संगठन इस्लामिक स्टेट (आई.एस.) के प्रति निष्ठा व्यक्त कर रहा था। हमले में शामिल वाहन से जांचकर्त्ताओं को आई.एस. का झंडा भी मिला है। अमरीकी मीडिया द्वारा एक वीडियो जारी किया गया है, जिसमें जब्बार के घर में विस्फोटकों को इकट्ठा करने के लिए एक वर्कबैंच दिख रही है। उसका घर रासायनिक अवशेषों और बोतलों से भरा हुआ है। इसी वीडियो में अलमारी के ऊपर एक खुली हुई कुरान भी दिखाई दी, जिसमें लिखा था, ''...वे अल्ला के लिए लड़ते हैं, और मारते हैं और खुद मारे जाते हैं...।'' बात केवल अमरीका या नववर्ष तक सीमित नहीं है। जर्मनी के मैगडेबर्ग में बीते 21 दिसंबर को क्रिसमस की खरीदारी कर रहे लोगों को एक सऊदी डाक्टर ने जानबूझकर अपनी बी.एम.डब्ल्यू. कार से कुचल दिया। इस हमले में एक बच्चे सहित 5 लोगों की मौत हो गई, 200 अन्य घायल हो गए। वह तेज रफ्तार से 400 मीटर तक कार दौड़ाता चला गया। हमलावर की पहचान 50 वर्षीय डाक्टर तालेब अब्दुल जवाद के रूप में हुई है, जिसे गिरफ्तार किया जा चुका है।

अमेरिकी आर्थिक नीतियां अन्य देशों को विपरीत रूप से कर सकती है प्रभावित

प्रह्लाद सबनानी

वैश्विक स्तर पर अमेरिकी डॉलर लगातार मजबूत हो रहा है और अंतरराष्ट्रीय बाजार में अन्य देशों की मुद्राओं की कीमत अमेरिकी डॉलर की तुलना में गिर रही है। इससे, विशेष रूप से विभिन्न वस्तुओं का आयात करने वाले देशों में वस्तुओं के आयात के साथ मुद्रा स्फीति का भी आयात हो रहा है। इन देशों में मुद्रा स्फीति बढ़ती जा रही है और इसे नियंत्रित करने के उद्देश्य से एक बार पुनः याज दरों में वृद्धि की सभावना भी बढ़ रही है। भारतीय रिजर्व बैंक को अंतरराष्ट्रीय बाजार में भारतीय रुपए के अवमूल्यन को रोकने के लिए भारत के विदेशी मुद्रा भंडार में से लगभग 5,000 करोड़ अमेरिकी डॉलर को बेचना पड़ा है जिससे भारत का विदेशी मुद्रा भंडार अपने उच्चाम स्तर 70,500 करोड़ अमेरिकी डॉलर से घटकर 65,500 करोड़ अमेरिकी डॉलर के भी नीचे आ गया है।

अमेरिकी डॉलर के लगातार मजबूत होने के चलते विश्व के लगभग सभी देशों की यही स्थिति बनती हुई दिखाई दे रही है। दूसरी ओर, अमेरिका में बजटीय घाटा एवं बाजार ऋण की राशि अपने उच्चत्तम स्तर पर पहुंच गई है एवं अमेरिका को इसे नियंत्रित करने के लिए अपनी आय में वृद्धि करना एवं व्यय को घटाना आवश्यक हो गया है। परंतु, 20 जनवरी 2025 को डॉनल्ड ट्रम्प के अमेरिका के राष्ट्रपति बनते ही सम्भव है कि ट्रम्प प्रशासन द्वारा आयकर में भारी कमी की घोषणा की जाय। डॉनल्ड ट्रम्प ने अपने चुनावी भाषण में इसके बारे में इशारा भी किया था। हां, सम्भव है कि आयकर को कम करने के चलते कुल आय में होने वाली कमी की भरपाई अमेरिका द्वारा कच्चे तेल के उत्पादन में वृद्धि कर इसके निर्यात में वृद्धि एवं अमेरिका में विभिन्न वस्तुओं के अमेरिका में होने वाले आयात पर कर में वृद्धि करने के चलते कुछ हद्द तक हो सके। परंतु, कुल मिलाकर यदि आय में होने वाली सम्भावित कमी की भरपाई नहीं हो पाती है तो अमेरिका में बजटीय घाटा एवं बाजार ऋण की राशि में अतुलनीय वृद्धि सम्भव है। जो एक बार पुन: अमेरिका में मुद्रा स्फीति को बढ़ा सकता है और फिर से अमेरिका में ब्याज दरों में कमी के स्थान पर वृद्धि देखने को मिल सकती है।

पूरे विश्व में पूंजीवादी नीतियों के चलते मुद्रा स्फीति को नियंत्रण में रखने के उद्देश्य से विभिन्न देशों द्वारा ब्याज दरों में वृद्धि की घोषणा की जाती रही है। किसी भी देश में मुद्रा स्फीति की दर यदि खाद्य पदार्थों की कीमतों में वृद्धि के चलते बढ़ रही है तो इसे ब्याज दरों में वृद्धि कर नियंत्रण में नहीं लाया जा सकता है। हां, खाद्य पदार्थों की बाजार में आपूर्ति बढ़ाकर जरूर मुद्रा स्फीति को तुरंत नियंत्रण में लाया जा सकता है। अत: यह मांग की तुलना में आपूर्ति सम्बंधी मुद्दा अधिक है। उत्पादों की मांग में कमी करने के उद्देश्य से बैंकों द्वारा ब्याज दरों में वृद्धि की जाती है, जिससे ऋण की लागत बढ़ती है और इसके कारण अंतत: विभिन्न उत्पादों की उत्पादन लागत बढ़ती है। उत्पादन लागत के बढ़ने से इन उत्पादों की मांग बाजार में कम होती है जो अंतत: इन उत्पादों के उत्पादन में कमी का कारण भी बनती है। उत्पादन में कमी अर्थात बहुराष्ट्रीय कम्पनियों द्वारा कर्मचारियों की छँटनी करने के परिणाम के रूप में भी दिखाई देती है। हाल ही के वर्षों में अमेरिका में जब मुद्रा स्फीति की दर पिछले लगभग 50 वर्षों के उच्चत्तम स्तर पर अर्थात 10 प्रतिशत के आसपास पहुंच गई थी, तब फेडरल रिजर्व द्वारा फेड दर (ब्याज दरों) को भी 0.25 प्रतिशत से बढ़ाकर 6.50 प्रतिशत तक लाया गया था, और यह दर लम्बे समय तक बनी रही थी। इसका प्रभाव, अमेरिका की सूचना प्रौद्योगिकी के क्षेत्र में कार्य कर रही कम्पनियों पर अत्यधिक विपरीत रूप में पड़ता दिखाई दिया था और लगभग 2 लाख इंजीनियरों की छँटनी इन कम्पनियों द्वारा की गई थी। अत: मुद्रा स्फीति को नियंत्रण में लाने के उद्देश्य से ब्याज दरों में लगातार वृद्धि करने का निर्णय अमानवीय है एवं इसे उचित निर्णय नहीं कहा जा सकता है। ब्याज दरों में वृद्धि करने का परिणाम वैश्विक स्तर पर कोई बहुत अधिक सफल भी नहीं रहा है। अमेरिका को मुद्रा स्फीति की दर को नियंत्रण में लाने के लिए लगभग 3 वर्ष(?) का समय लग गया है और यह इस बीच ब्याज दरों को लगातार उच्च स्तर पर बनाए रखने के बावजूद सम्भव नहीं हो पाया है।

भारत में भी भारतीय रिजर्व बैंक द्वारा मुद्रा स्फीति को नियंत्रित करने के उद्देश्य से रेपो दर (ब्याज दर) में पिछले लगभग 22 माह तक कोई परिवर्तन नहीं किया गया था एवं इसे उच्च स्तर पर बनाए रखा गया था जिसका असर अब भारत के आर्थिक विकास दर पर स्पष्ट दिखाई दे रहा है एवं वित्तीय वर्ष 2024-25 की द्वितीय तिमाही में भारत में सकल घरेलू उत्पाद की वृद्धि दर गिरकर 5.2 प्रतिशत रही है, जो वित्तीय वर्ष 2023-24 में 8.2 प्रतिशत की रही थी। आर्थिक विकास दर में वृद्धि दर का कम होना अर्थात देश में रोजगार के कम अवसर निर्मित होना एवं नागरिकों की आय में वृद्धि की दर का भी कम होना भी शामिल रहता है। अत: लंबे समय तक ब्याज दरों को ऊंचे स्तर पर नहीं बनाए रखा जाना चाहिए।

यह सही है कि मुद्रा स्फीति को एक दैत्य की संज्ञा भी दी जाती है और इसका सबसे अधिक विपरीत प्रभाव गरीब वर्ग पर पड़ता है। अत: किसी भी देश के लिए इसे नियंत्रण में रखना अति आवश्यक है। परंतु, मुद्रा स्फीति को नियंत्रण में रखने हेतु लगातार ब्याज दरों में वृद्धि करते जाना भी अमानवीय कृत्य है। ब्याज दरों में वृद्धि की तुलना में विभिन्न उत्पादों की बाजार में आपूर्ति बढ़ाकर मुद्रा स्फीति को तुरंत नियंत्रण में लाया जा सकता है। विभिन्न देशों की सरकारों द्वारा उत्पादों की आपूर्ति बढ़ाने हेतु प्रयास किए जाने चाहिए। आपूर्ति बढ़ाने के प्रयासों में इन उत्पादों के उत्पादन में वृद्धि करना भी शामिल होगा, कम्पनियों द्वारा उत्पादन में वृद्धि करने के साथ साथ रोजगार के नए अवसरों का निर्माण भी किया जाएगा। इस प्रकार के निर्णय देश की अर्थव्यवस्था के लिए हितकारी एवं लाभदायक साबित होंगे।

अमेरिका द्वारा आर्थिक क्षेत्र से सम्बंधित की जा रही विभिन्न घोषणाओं जैसे चीन एवं अन्य देशों से आयात की जाने वाली वस्तुओं पर आयात कर में 60 प्रतिशत से 100 प्रतिशत तक की वृद्धि करना, अमेरिका पर लगातार बढ़ रहे ऋण को कम करने हेतु किसी भी प्रकार के प्रयास नहीं करना, अमेरिकी बजटीय घाटे का लगातार बढ़ते जाना, विदेशी व्यापार के क्षेत्र में व्यापार घाटे का लगातार बढ़ते जाना, विभिन्न देशों द्वारा डीडोलराईजेशन के प्रयास करना आदि ऐसी समस्याएं हैं जिनका हल यदि शीघ्र ही नहीं निकाला गया तो अमेरिकी अर्थव्यवस्था के साथ साथ अन्य देशों की अर्थव्यवस्थाएं भी विपरीत रूप से प्रभावित हुए बिना नहीं रह सकेंगी।

प्राचीन भारत के इतिहास में मुद्रा स्फीति जैसी परेशानियों का जिक्र नहीं के बराबर मिलता है। भारतीय आर्थिक दर्शन के अनुसार भारत में उत्पादों की उपलब्धता पर विशेष ध्यान दिया जाता रहा है अत: वस्तुओं की बढ़ती मांग के स्थान पर बाजार में वस्तुओं की आपूर्ति ही अधिक रही है। ग्रामीण इलाकों में 50 अथवा 100 ग्रामों के क्लस्टर के बीच हाट (बाजार) लगाए जाते थे जहां स्थानीय स्तर पर निर्मित वस्तुओं/उत्पादों/खाद्य पदार्थों को बेचा जाता था। स्थानीय स्तर पर निर्मित की जा रही वस्तुओं को स्थानीय बाजार में ही बेचने से इन वस्तुओं के बाजार मूल्य सदैव नियंत्रण में ही रहते थे। अत: वस्तुओं की मांग की तुलना में उपलब्धता अधिक रहती थी। कई बार तो उपलब्धता का आधिक्य होने के चलते इन वस्तुओं के बाजार में दाम कम होते पाए जाते थे। इस प्रकार मुद्रा स्फीति जैसी समस्याएं दिखाई नहीं देती थीं। जबकि वर्तमान में, विभिन्न देशों के बाजारों में विभिन्न उत्पादों की उपलब्धता पर ध्यान ही नहीं दिया जा रहा है, इन वस्तुओं की मांग बढ़ने से इनकी कीमतें बढ़ने लगती हैं, और, इन कीमतों पर नियंत्रण करने के उद्देश्य से यह प्रयास किया जाने लगता है कि किस प्रकार इन वस्तुओं की मांग बाजार में कम की जाय, इसे एक नकारात्मक निर्णय ही कहा जाना चाहिए।

वैश्विक स्तर पर अर्थशास्त्र के वर्तमान सिद्धांत (मॉडल) विभिन्न प्रकार की आर्थिक समस्याओं को हल करने के संदर्भ में बोथरे साबित हो रहे हैं। इसलिए अमेरिकी एवं अन्य विकसित देशों के अर्थशास्त्री आज साम्यवादी एवं पूंजीवादी सिद्धांतों (मॉडल) के स्थान पर वैश्विक स्तर पर आर्थिक क्षेत्र में आ रही विभिन्न समस्याओं के हल हेतु एक तीसरे रास्ते (मॉडल) की तलाश करने में लगे हुए हैं और इस हेतु वे भारत की ओर बहुत आशाभारी नजरों से देख रहे हैं।

नए चीनी वायरस से दहशत, आरोपों पर दी गई सफाई से नहीं कोई सहमत?

डॉ. रमेश ठाकुर

चाइना की धरती से निकलकर दुनिया में कोहराम मचाने वाले जानलेवा वायरस बेकसूर इंसानों का पीछा करना कभी छोड़ेंगे या नहीं? क्योंकि प्रत्येक खतरनाक वायरसों का केंद्र चीन ही होता है? कोविड-19 के बाद एक ऐसी अबूझ पहेली है जिसे न डब्ल्यूएचओ सुलझा पाया और न ही दुनिया की तमाम चिकित्सा रिसर्च रिपोर्ट किसी नतीजे पर पहुंच पाईं? हालांकि, वायरस के निमार्ण के पीछे चीनी हिमाकत पर शक तो सभी को बहुत पहले से है? लेकिन तथ्यों के साथ कोई उसे एक्सपोज नहीं कर पाया? ऐसे अंसख्यक सवाल हैं जो उनके इस नए 'ह्यूमन मेटान्यूमो' वायरस यानी एचएमपीवी के बाद खड़े हुए हैं। सवाल दरअसल खड़े होने भी चाहिए, आखिर क्यों लोगों की जान लेने पर वो आमादा है। वायरसों के इतर भी उनकी अमानवीय नापाक हरकतों से न सिर्फ पड़ोसी मुल्क, बल्कि समूचा संसार परेशान और दुखी हुआ पड़ा है। ऐसे में विश्व बिरादरी को सामूहिक रूप से 'ह्यूमन मेटान्यूमो' वायरस की तथ्यों सहित तहकीकात करके जानकारी को सार्वजनिक करना चाहिए। हालांकि, चीन नए वायरस के आरोपों को नकार रहा है।

गौरतलब है बीते 3 वर्ष पूर्व कोरोना वायरस ने संसार को जो गहरे जख्म दिए थे, वो आज भी हरे हैं और तब तक रहेंगे? शायद जब तक इस धरती पर इंसानों का वजूद रहेगा? क्योंकि कोरोनाकाल में कोई परिवार ऐसा नहीं बचा होगा जिसने अपने किसी सगे या कोई करीबी दोस्त, पड़ोसी, रिश्तेदार को न खोया हो? भारत में 'ह्यूमन मेटान्यूमो' का पहला संक्रमण एक बच्ची में 6 जनवरी को सुबह कर्नाटक में मिला और शाम होते-होते गुजरात से लेकर तमिलनाडू तक मरीजों की संख्या पांच-छह तक पहुंच गई। संक्रमितों की खबर ने ऐसी दहशत फैलाई, जिससे केंद्र सरकार भी हलकान हुई। केंद्रीय स्वास्थ्य मंत्री जेपी नड्डा को भी मीडिया में आकर बताना पड़ा, कि देशवासियों को फिलहाल चिंता करने और घबराने की आवश्यकता नहीं है। क्योंकि स्थिति पर उनका पूर्ण नियंत्रण है और संपूर्ण इंतजाम केंद्रीय स्तर पर किए जा चुके हैं। उन्होंने इस वायरस को नया नहीं, बल्कि पुराना ही बताया है? जबकि, आइसीएमआर का मानना है कि सर्दियों में सामान्य न्यूमोनिया वायरसों का खतरा हमेशा बढ़ता है। पर, ये वायरस जानलेवा कभी नहीं होते थे, लेकिन अब होने लगे हैं।

'ह्यूमन मेटान्यूमो' वायरस पर हेल्थ मिनिस्ट्र और आइसीएमआर दोनों के बयानां में अंतर है। बिना तालमेल और अ-पुष्ट सूचनाओं के आदान-प्रदान से सभी को बचना होगा। क्योंकि इससे स्थिति बिलावजह नाजुक हो जाती हैं। दोनों संस्थाओं को सबसे पहले मॉनिटरिंग पर फोकस करना होगा, जो कोरोना के वक्त अच्छे से नहीं किया था। नए वायरस की जागरूकता पर दोनों की माने तो खतरा है भी, और नहीं भी? हालांकि इसके बाद गेंद जनता के पाले में चली जाती है। कहने का मतलब है, सतर्कता जनता को स्वयं से करनी होगी। उन्हें अपनी इम्युनिटी पर खासा ध्यान रखना होगा। क्योंकि कोरोना के वक्त भी हुकूमत और चिकित्सीय संगठनों की ओर से शुरुआत में कुछ ऐसा ही कहा गया था। लेकिन उसके बाद में हालात कैसे बनें, जिसे बयां करने मात्र से आज भी रूहें कांप उठती हैं। पूरे सिक्किम राज्य की जितनी मौजूदा

समय में आबादी है, उससे कहीं ज्यादा भारतीयों की जाने कोरोना से गईं। 'ह्यूमन मेटान्यूमो' को लेकर आमजन को इसलिए चिंता करनी पड़ेगी, क्योंकि इस वायरस की भी अभी तक कोई टीका या एंटीवायरल दवा नहीं निर्मित हुई है। भारत में 'ह्यूमन मेटान्यूमो' के अभी तक जितने केस सामने आए हैं उन सभी मरीजों को सामान्य बुखार की दवाइयां ही दी जा रही हैं। किसी विशेष दवा का प्रबंध भी नहीं हुआ है।

गौरतलब है कि डब्ल्यूएचओ ने चीन से 'ह्यूमन मेटान्यूमो' वायरस को लेकर रिपोर्ट मांगी है, जिसे उसने अभी तक नहीं दी? इससे तो यह कहावत सीधे-सीधे चरितार्थ होती है कि 'चोर की दाढ़ी में तिनका'। चीन की चालाकी को लेकर न सिर्फ भारत को, बल्कि पूरे संसार को चौकन्ना रहना होगा। क्योंकि वायरस के खेल के पीछे उसकी विश्वसनीयता कोरोना के बाद भयंकर रूप से सवालों के घेरे में आ चुकी है। अब देखिए न, डब्ल्यूएचओ के बार-बार मांगने पर भी चीन ने डाटा रिपोर्ट नहीं मुहैया करवाई है। इससे संदेह न हो, तो और क्या? नए वायरस से बुजुर्गों, बच्चों, गर्भवती महिलाओं को विशेष पर बचना होगा। उनके लिए घातक ये वायरस। इसके अलावा कमजोर इम्यूनिटी वाले मरीजों, जैसे दिल, फेफड़े, लिवर, कैंसर, चर्म रोगियों को और भी ज्यादा सावधानियां बरतने की आवश्यकता है। वायरस को लेकर समूचे विश्व में फिलहाल भ्रम की स्थिति बनी हुई है। दिल्ली स्थित 'एम्स' अस्पताल की तत्कालीक चिकित्सा शोध रिपोर्ट 'ह्यूमन मेटान्यूमो वायरस' की उत्पत्ति सन-2001 में होना दर्शाती है जिसमें मात्र श्वसन संक्रमण का ही खतरा रहता है और ज्यादा कुछ नहीं? पर, वायरस के इस नए वर्जन से मरीजों के हताहत होने की सूचनाएं हैं। संदेह दरअसल यहीं से गहरा जाता हैं कि कहीं इस पुराने वायरस की आड़ में कोई नया मानव निर्मित वायरस तो नहीं फैलाया गया है?

बहरहाल, 'ह्यूमन मेटान्यूमो वायरस' को लेकर भ्रम की स्थिति यहीं से पता चलती है, कि दुनिया के कई देश इस वायरस को जहां रहस्यमय कह रहे हैं। तो वहीं, भारतीय चिकित्सक पुराना वायरस बताने में तुले हैं। हालांकि, भारतीय को अभी हद से ज्यादा भयभीत होने की जरूरत नहीं है। क्योंकि एचएमपीवी का व्यापक असर अभी चीन में भी नहीं है अन्य देशों में भी एकाध ही केस फाइल हुए हैं।

बिलासपुर की साफ-सफाई का रियलिटी चेक

5 साल में 18 से 29 करोड़ पहुंचा बजट, फिर भी स्वच्छता में 28वीं रैंक पर शहर

मीडिया ऑडीटर, बिलासपुर एजेंसी। छत्तीसगढ़ की न्यायधानी बिलासपुर में सफाई का खर्च पिछले पांच वर्षों में 18.69 करोड़ से 29 करोड़ रुपए सालाना पर पहुंच गया। इसके बावजूद स्वच्छता सर्वेक्षण की रैंकिंग 11 से और नीचे गिरकर साल 2023 में 28वें पायदान पर पहुंच गई। साल 2024 की रैंकिंग के लिए सर्वे टीम दिसंबर में आनी थी पर अब कहा जा रहा है कि यह कभी भी धमक सकती है। सफाई का आलम यह है कि यदि आज सर्वे टीम पहुंच जाए तो सफाई की पोल खुल जाएगी।

गुरुवार को कलेक्टर, कमिश्नर के बंगलों वाले लिंक रोड से लेकर ऑफिसर्स मेस, पुराना बस स्टैंड और इमलीपारा रोड जैसे व्यस्ततम क्षेत्रों का जायजा लिया, तो हालात कुछ ठीक नजर नहीं आए। मैकेनाइज्ड सफाई वाले मेन रोड की सड़कें चकाचक दिखीं पर गलियों में गंदगी पसरी रही। ऑफिसर्स मेस, पुराना बस स्टैंड, इमलीपारा रोड की नालियां बजबजाती मिलीं।

बिल्लू बिलासपुरिया की धमक अयोध्या तक: ऐसा नहीं है कि बिलासपुर नगर निगम में कुछ नहीं हो रहा है। स्वच्छता के नाम पर प्रचार, प्रसार में दिल खोल कर खर्चा किया जा रहा है। यहां तक कि सफाई व्यवस्था को घर घर पहुंचाने के लिए पंचायत क्षेत्रों के लिए इस साल 37 नई गाड़ियां खरीदी गईं, जिनसे डोर टू डोर कचरा इकट्ठा किया जा रहा है।

स्वच्छता का शुभंकर 'बिल्लू बिलासपुरिया' को प्रचार के लिए अयोध्या और बनारस तक भेजा गया, जहां सड़क पर कचरा न फेंक कर उसे डस्टबिन में डालने का संदेश प्रचारित किया गया।

टॉयलेट के रिनोवेशन पर 1.33 करोड़ और वॉल राइटिंग पर 25 लाख खर्च: नगर निगम के इंजीनियर मनीष यादव की मानें तो 62 सार्वजनिक टॉयलेट को सर्वसुविधायुक्त बनाने पर 1.33 करोड़ रुपए खर्च किए जा चुके हैं। हरेक टॉयलेट में फीडबैक लेने के लिए मशीन और सेनेटरी पैड को वैज्ञानिक तरीके से नष्ट करने के लिए इंसीनरेटर लगाए जा चुके हैं। वॉल राइटिंग पर 25 लाख रुपए खर्च किए जा रहे हैं।

इस बार अच्छी रैंकिंग का दावा: अपर आयुक्त खजांची कुम्हार का दावा है कि इस बार के स्वच्छता सर्वेक्षण में बिलासपुर की रैंकिंग बेहतर होगी, क्योंकि रियूज वाटर के लिए ड्यूअल पाइपिंग और रेन वाटर हार्वेस्टिंग के लिए प्रावधान किया गया है। उन्होंने बताया कि हर वार्ड में स्वच्छता की मॉनिटरिंग के लिए इंजीनियर और सहायक राजस्व निरीक्षक की ड्यूटी लगाई गई है। इसी प्रकार जीएनडी वेस्ट के पुनः उपयोग के लिए तिफरा में प्लांट लगाया जा रहा है।

सफाई की ऑनलाइन मॉनिटरिंग: नगर निगम के हेल्थ ऑफिसर अनुपम तिवारी का कहना है कि मेन रोड सहित वार्डों की अंदरूनी गलियों की सफाई की ऑनलाइन मॉनिटरिंग की जा रही है। किस वार्ड की नाली, गली में गंदगी, कचरे की सफाई के लिए कहां कितने लोग लगे हैं, इसकी निगरानी नियमित रूप से की जा रही है। उन्होंने कहा कि वार्डों की सफाई का दायित्व जोन कमिश्नरों को दिया गया है, ताकि निगम एरिया के आठों जोन को स्वच्छ रखा जा सके।

स्टील प्लांट में हादसा..1 की मौत

चिमनी गिरने से अभी भी 4 मजदूर नीचे दबे, रेस्क्यू ऑपरेशन जारी

मीडिया ऑडीटर, मुंगेली एजेंसी। छत्तीसगढ़ के मुंगेली जिले में कुसुम पावर प्लांट में गुरुवार को बड़ा हादसा हो गया। रामबोर्ड गांव में स्थित कुसुम इस्मेल्टर्स स्टील प्लांट में चिमनी गिरने से 6 मजदूर चपेट में आ गए। इनमें से एक की मौत हो गई। वहीं अभी 4 मजदूर नीचे दबे हुए हैं।

मामला सरगांव थाना इलाके का है। बताया जा रहा है कि, प्लांट प्रशासन ने पहले तो लोगों को अंदर जाने से रोका, लेकिन हंगामे और कर्मचारियों के दबाव के बाद ही रेस्क्यू टीम को अंदर जाने दिया गया। फिलहाल, रेस्क्यू टीम बचाव कार्य में जुटी हुई है।

कर्मचारियों ने कहा- मशीनों की जांच नहीं हुई: यह हादसा मनियारी नदी के पास, बिलासपुर-रायपुर हाईवे से लगे रामबोर्ड गांव के कुसुम प्लांट में हुआ। शुरुआती जानकारी के मुताबिक, प्लांट में रखे भारी सैलो (टैंक/चिमनी) अचानक गिर गया, जिससे वहां काम कर रहे कर्मचारी इसकी चपेट में आ गए।

प्लांट के कुछ कर्मचारियों ने बताया कि हादसा प्रबंधन की लापरवाही से हुआ है। अंदर की मशीनों और स्ट्रक्चर की समय पर जांच और मरम्मत नहीं की गई थी, जिसकी वजह से यह घटना हुई। प्लांट विस्तार में जल्दबाजी का खामियाजा भुगतना पड़ा है।

उच्चस्तरीय जांच की मांग: इससे पहले भी क्षेत्रवासी प्लांट से हो रहे प्रदूषण से काफी परेशान रहे हैं। हादसे के बाद घटनास्थल के पास बड़ी संख्या में स्थानीय और परिजन जुट गए हैं। उनकी मांग है कि हादसे की उच्चस्तरीय जांच कराई जाए और दोषियों पर कार्रवाई की जाए। प्रभावित परिवारों ने प्लांट प्रबंधन से मुआवजे की मांग की है।

4 महीने पहले सरगुजा में भी ऐसा हादसा: छत्तीसगढ़ के सरगुजा में एलुमिना प्लांट में हॉपर गिरने से 4 मजदूरों की मौत हो गई थी। मां कुदरगढ़ी प्लांट में कोयले से लोड हॉपर और करीब 150 फीट बेल्ट गिरने से यह हादसा हुआ। हॉपर गिरने से 7 मजदूर दब गए थे। रेस्क्यू ऑपरेशन के दौरान 4 मजदूरों की डेड बॉडी मिली। वहीं 3 लोगों को मेडिकल कॉलेज हॉस्पिटल अंबिकापुर में भर्ती किया गया। हादसे के दौरान 2 लोगों ने भागकर अपनी जान बचाई थी।

2 टीआई समेत 26 पुलिसकर्मियों का तबादला

एएसआई लाइन अटैच, बिलासपुर एसपी रजनेश सिंह ने जारी किया आदेश

मीडिया ऑडीटर, बिलासपुर एजेंसी। बिलासपुर एसपी रजनेश सिंह ने दो टीआई समेत 26 पुलिसकर्मियों का तबादला आदेश जारी किया है। तारबाहर थाना प्रभारी जेपी गुप्ता जांजगीर के लिए रिलीव कर दिए गए हैं। उनकी जगह एसपी कार्यालय में शिकायत शाखा संभाल रहे टीआई कृष्ण चंद्र सिदार को नया प्रभारी बनाया है।

वहीं, निरीक्षक दामोदर मिश्रा को पुलिस लाइन से शिकायत शाखा में पदस्थ किया गया है। सकरी थाने में धरना देने से नाराज एसपी ने एएसआई धनेश साहू को लाइन अटैच कर दिया है। एसआई आदित्य ठाकुर को तारबाहर से यातायात थाना भेजा गया है। एएसआई विमला मनहर को लाइन से तोरवा, सुरेंद्र तिवारी और अशोक मिश्रा को सकरी थाना भेजा गया है। वहीं सकरी थाने में पदस्थ एएसआई धनेश साहू को लाइन अटैच किया गया है।

पुलिस ने नहीं लिखी रिपोर्ट, थाने में दिया धरना: दरअसल, एक दिन पहले सकरी क्षेत्र की रजनी आवले और उनका पूरा परिवार धरने पर बैठ गया था। उन्होंने पुलिस अधिकारियों पर प्रधान आरक्षक अरूण कमलवंशी पर जान से मारने की धमकी देने और शिकायत पर कार्रवाई नहीं करने के आरोप लगाए थे। पुलिसकर्मियों का कहना था कि वो आए दिन मारपीट की रिपोर्ट लेकर थाने पहुंच जाती है। वहीं, रजनी आवले का आरोप था कि पुलिस कर्मियों ने उनकी रिपोर्ट नहीं लिखी थी। एएसआई धनेश साहू के लाइन अटैच करने के आदेश को इसी से जोड़कर देखा जा रहा है।

लाइन से मार्को को सिविल लाइन भेजा गया: सिरगिट्टी थाने में रहते हुए विवादों में घिरे केशव मार्को को एसपी ने थोड़े समय पहले लाइन अटैच किया था, जिसे एक बार फिर से मौका देते हुए एसपी ने सिविल लाइन थाना भेजा है। इसके अलावा लाइस से प्रधान आरक्षक बालेश्वर प्रसाद तिवारी, आरक्षक सुरेंद्र कुमार साय को चकरभाठा थाना भेजा गया है। सिविल लाइन में पदस्थ रीडर मालिक राम को रतनपुर भेजा और उनकी पर रामधीर टोप्पो को भेजा है।

स्वास्थ्य मंत्री के प्रयासों से एमसीबी में मोतियाबिंद का ऑपरेशन प्रारंभ

मीडिया ऑडीटर, एमसीबी निप्र। राष्ट्रीय अंधत्व एवं अल्प दृष्टि नियंत्रण कार्यक्रम के तहत स्वास्थ्य मंत्री छत्तीसगढ़ शासन के प्रयासों से सामुदायिक स्वास्थ्य केंद्र मनेंद्रगढ़ में मोतियाबिंद ऑपरेशन प्रारंभ हो गया है। डॉ. अविनाश खरे, मुख्य चिकित्सा एवं स्वास्थ्य आधिकारी मनेंद्रगढ़ चिरमिरी भरतपुर के निर्देशन एवं जिला कार्यक्रम प्रबंधक व डॉ. पुष्पेंद्र सोनी, डॉ. एस. एस. सिंह बीएमओ के मार्गदर्शन में सोमवार को 17 लोगों का मोतियाबिंद ऑपरेशन डॉ. आर.एस. सेंगर नेत्र विशेषज्ञ द्वारा किया गया । ज्ञात हो कि विगत जुलाई माह में बारिश के कारण ऑपरेशन थियेटर में नमी आ जाने के कारण ऑपरेशन को बंद किया गया था। ओटी की रिपेयरिंग कराने के बाद कल्चर नेगेटिव आने के बाद ओटी में ऑपरेशन शुरू हो गया है। स्वास्थ्य मंत्री के द्वारा डॉ. मनोज सिंह आई सर्जन बिलासपुर और डॉ. उमा खापर्डे अपनी सेवाएं जिला चिकित्सालय में दे रहे हैं।

बलरामपुर के चरचरी में नल जल योजना फेल

मुसीबत में पहाड़ी कोरवा जनजाति के लोग, नदी में गड्ढा कर गंदा पानी पीने को मजबूर

मीडिया ऑडीटर, बलरामपुर एजेंसी। बलरामपुर जिले में राष्ट्रपति के दत्तक पुत्र कहे जाने वाले पहाड़ी कोरवा जनजाति का संघर्ष 60 साल बाद भी खत्म नहीं हुआ। वाड्रफनगर जनपद पंचायत के चरचरी गांव के लखारपारा में रहने वाले 140 लोग पीने के पानी के लिए आज भी संघर्ष कर रहे हैं। वे नदी के पानी से अपनी प्यास बुझाने को मजबूर है। हालात इतने बदतर हैं कि ग्रामीण नदी में गड्ढे खोदकर दूषित पानी पी रहे हैं। इस पानी के उपयोग से ग्रामीण बीमार पड़ रहे हैं, बच्चे कुपोषित हो रहे है।

जान जोखिम में डालकर पानी लेने जाते हैं: पहाड़ी कोरवा जनजाति के परिवारों का कहना है कि यहां गांव तक सड़क नहीं होने से जंगल के रास्ते से आना जाना पड़ता है। जंगल में बाघ, भालू और हाथियों का हमेशा डर बना रहता है। यह क्षेत्र जंगली जानवरों से भरा पड़ा है। ऐसे में जान जोखिम में डालकर पानी लेने जाते हैं।

जल जीवन मिशन योजना विफल: गांव में हर घर नल योजना के माध्यम से पानी पहुंचाने के लिए जल जीवन मिशन के तहत नल के स्टैंड पोस्ट लगाए गए थे, लेकिन योजना लागू हुए एक साल से अधिक समय बीत जाने के बाद भी नलों में पानी नहीं आया। ग्रामीण आज भी पानी के लिए भटक कर रहे हैं।

तीन साल पहले किए गए वादे अधूरे: तीन साल पहले तत्कालीन कलेक्टर ने अपने प्रशासनिक अमले के साथ गांव का दौरा किया था। उन्होंने गांव को विकास की मुख्यधारा से जोड़ने के कई वादे किए थे, लेकिन आज तक उन वादों पर कोई अमल नहीं हुआ। ग्रामीण अब इन खोखले वादों से नाराज हैं।

सरपंच से लेकर कलेक्टर तक शिकायतः लोगों का कहना है कि जिम्मेदार से शिकायत करने के बाद भी यहां के हालत नहीं सुधरे हैं। सरपंच से लेकर कलेक्टर तक लिखित में शिकायत कर चुके है, लेकिन किसी ने समस्या नहीं सुनी। बच्चों में भी कुपोषण नजर आ रहा है।

ग्रामीणों की समस्या की कोई जानकारी नहीं: वाड्रफनगर जनपद पंचायत के सीईओ मोहम्मद निजामुद्दीन ने बताया कि उन्हें ग्रामीणों की समस्या की कोई जानकारी ही नहीं है। जब उनसे लखारपारा की समस्याओं पर सवाल किया गया तो कैमरे के सामने गोलमोल जवाब दिए।

राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 प्रशिक्षण संपन्न

मीडिया ऑडीटर, एमसीबी निप्र। राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 के निर्धारित लक्षण को प्राप्त करने जिला शिक्षा अधिकारी मनेंद्रगढ़-चिरमिरी-भरतपुर द्वारा तीनों विकासखंड में संकुल प्राचार्य, प्राचार्य एवं संकुल समन्यकों की बैठक आयोजित की गई। बैठक में जिला शिक्षा अधिकारी अजय मिश्रा ने राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 के अनुरूप शालाओं में पाठ्यचर्या को सुचारू रूप से संचालन एवं बच्चों में समझ के साथ सीखने की दक्षता प्राप्त करने के लिए राज्य परियोजना कार्यालय समग्र शिक्षा छत्तीसगढ़ द्वारा प्रकाशित चर्चा पत्र जनवरी 2025 में दिए गए एजेंडा के अनुसार विभिन्न पहलुओं को कार्यान्वित करने हेतु निर्देशित किया। तत्पश्चात जिला नोडल अधिकारी जसवंत कुमार द्वारा नई राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 के बारे में विस्तार पूर्वक प्रशिक्षण दिया गया। ज्ञात हो कि 2020, 5 स्तंभों पर आधारित है और ये पहुंच, समता, गुणवत्ता, वहनीयता और जवाबदेही हैं। पहुंच - जाति, पंथ, स्थान या लिंग के बावजूद सभी बच्चों की तुलनीय गुणवत्ता की प्रारंभिक शिक्षा तक पहुंच होनी चाहिए। समता - छात्रों को व्यक्तिगत सहायता प्रदान करना। गुणवत्ता - सभी छात्रों को गुणवत्तापूर्ण शिक्षा प्रदान करना है। जैसे 1) जानना सीखना, 2) करना सीखना, 3) साथ रहना सीखना, 4) होना सीखना, और 5) स्वयं और समाज को बदलना सीखना।

बैठक में विकासखंड शिक्षा अधिकारी सुरेंद्र जायसवाल, संकुल प्राचार्य संजीव सिंह, गिरीश कुरचानिया, श्रीकांत लांजेवार, बलराज पाल, सत्येंद्र सिंह, डॉ विनोद पांडेय, टी विजय गोपाल राव सहायक विकासखंड अधिकारी वीरेंद्र पांडे, सहित अन्य प्राचार्य एवं संकुल समन्वयक उपस्थित रहे।

मिशन अस्पताल को तोड़ने पर हाईकोर्ट की रोक

15 दिन में सचिव राजस्व और आपदा प्रबंधन को निराकरण के निर्देश, जानें पूरा मामला

मीडिया ऑडीटर, बिलासपुर एजेंसी। बिलासपुर के चर्चित मिशन अस्पताल परिसर में स्थित भवन में तोड़फोड़ की कार्रवाई पर हाईकोर्ट ने रोक लगा दी है। क्रिश्चियन वुमन बोर्ड ऑफ मिशन ने हाईकोर्ट में बताया कि, संभाग आयुक्त के न्यायालय से अपील खारिज होने के बाद उन्होंने सचिव राजस्व एवं आपदा प्रबंधन पुनर्वास विभाग से अपील की थी। बावजूद इसके तोड़फोड़ की कार्रवाई की गई।

जिस पर जस्टिस बीडी गुरु की सिंगल बेंच ने 15 दिनों में सचिव राजस्व एवं आपदा प्रबंधन पुनर्वास विभाग को अपील का निराकरण करने और अपील के निराकरण तक तोड़फोड़ की कार्रवाई स्थगित रखने के आदेश जारी किया है। इस पर सीनियर एडवोकेट बीपी शर्मा, पुष्प गुप्ता और मनीलाल साकत ने बहस की।

लीज निरस्त के बाद प्रशासन ने कब्जे ने लिया: दरअसल, मिशन अस्पताल की जमीन की लीज निरस्त होने के बाद जिला प्रशासन ने इसे अपने कब्जे में ले लिया है। नगर निगम के इंजीनियरों की कमेटी बनाकर कैंपस में स्थापित भवनों का टेक्निकल परीक्षण कराया गया। जिसमें जो भवन उपयुक्त पाया गया, उसमें निगम का जोन दफ्तर और अतिक्रमण निवारण दफ्तर लगा दिया गया।

जबकि जो भवन अनुपयुक्त पाया गया और जिसमें जान माल का नुकसान होने की आशंका थी। उसे ढहाने की कार्रवाई जिला प्रशासन ने बुधवार की सुबह पुलिस बल की मौजूदगी में शुरू की थी। जिला प्रशासन ने 75 फीसदी भवन को जमीदोंज कर दिया है।

यह है मिशन अस्पताल से जुड़ा पूरा मामला: मिशन अस्पताल के लीज का मामला काफी चर्चाओं में रहा था। यह जमीन प्राइम लोकेशन में स्थित है। जिसे सेवा के नाम से 11 एकड़ जमीन लीज पर दी गई थी। लीज पर जमीन लेकर डायरेक्टर रमन जोगी ने इसे चौपाटी बनाकर किराए पर चढ़ा दिया। इसके एवज में हर महीने लाखों रुपए कमाने लगे थे। कैम्पस के भीतर एक रेस्टोरेंट भी इस पर संचालित हो रहा था।

जिला पंचायत के सदस्य, जनपद अध्यक्ष, जनपद सदस्य के प्रवर्गवार एवं महिलाओं के प्रवर्गवार स्थानों का आरक्षण प्रक्रिया हुआ सम्पन्न

मीडिया ऑडीटर, एमसीबी निप्र। कलेक्टर डी. राहुल वेंकट ने पंचायत निर्वाचन आरक्षण जिला सदस्य, जनपद अध्यक्ष एवं जनपद सदस्य के प्रवर्गवार एवं महिलाओं के प्रवर्गवार स्थानों के आबंटन, आरक्षण के लिये कलेक्ट्रेट कार्यालय मनेंद्रगढ़ के सभा कक्ष में बैठक की गई ।

जिसमें जिला पंचायत सदस्य मनेन्द्रगढ़-चिरमिरी-भरतपुर जिला पूर्ण रूप से अनुसूचित क्षेत्र (पेसा क्षेत्र) होने के कारण जिला पंचायत सदस्यों को आरक्षण सर्वप्रथम अनुसूचित जनजाति, अनुसूचित जाति किये जाने का प्रावधान है। छत्तीसगढ़ पंचायत निर्वाचन नियम 1995 के नियम 4 के बिंदु क्रमांक 3 के तहत सर्वप्रथम अनुसूचित जनजाति के लिए स्थानों के आरक्षण की कार्यवाही किया गया । जिसमें कलेक्टर द्वारा कुल 10 निर्वाचन क्षेत्रों का आवंटन किया। जिसमें अजजा की 7 सीटों के लिए क्षेत्र क्रमांक 5 केल्हारी, क्षेत्र क्रमांक 6 ताराबहरा और क्षेत्र क्रमांक 8 चैनपुर को अजजा मुक्त के लिए दिया गया है, वही 50 प्रतिशत महिला आरक्षण का प्रक्रिया लॉटो के माध्यम से निकाला गया जिसमें क्षेत्र क्रमांक 2 कंजिया, क्षेत्र क्रमांक 3 बहरासी, क्षेत्र क्रमांक 9 देवाडांड और क्षेत्र क्रमांक 10 खड़गवां को अजजा महिला के लिए दिया गया है । वही अजा के लिए महिला आरक्षण के तहत क्षेत्र क्रमांक 1 भरतपुर को दिया गया है । और अनारक्षित की कुल 2 सीट में 1 सीट मुक्त के लिए क्षेत्र क्रमांक 7 बरबसपुर दिया गया । वही 50 प्रतिशत महिला आरक्षण के अनुसार लॉट के माध्यम से निकाला गया जिसमें क्षेत्र क्रमांक 4 कोटाडोल को अनारक्षित महिला के लिए दिया गया । इसी के साथ कलेक्टर ने आगे जिला पंचायत अध्यक्ष अजजा की कुल 3 सीट भरतपुर, खड़गवां और मनेंद्रगढ़ के लिए 50 प्रतिशत महिला आरक्षण के अनुसार लॉट के माध्यम से निकाला गया, जिसमे खड़गवा और मनेंद्रगढ़ 2 सीट अजजा महिला को आवंटन किया गया वही भरतपुर 1 सीट को अजजा मुक्त आवंटन किया गया ।

मनेन्द्रगढ़: आगे कलेक्टर ने जनपद पंचायत सदस्य मनेन्द्रगढ़ की कुल 17 सीटों का महिला आरक्षण किया । जिसमें मनेंद्रगढ़ में अजजा का कुल 11 सीट में से मुक्त के लिए 5 सीट दिया गया है जिसमे क्षेत्र क्रमांक 6 घुटरा , क्षेत्र क्रमांक 7 पेंड्री, क्षेत्र क्रमांक 9 खैरबना, क्षेत्र क्रमांक 12 सरभोका और क्षेत्र क्रमांक 17 छिपछिपी को अजजा मुक्त को दिया गया है, वही 50 प्रतिशत महिला आरक्षण लॉट के माध्यम से अजजा महिला के 6 सीट आरक्षण लॉट माध्य से किया गया है, जिसमे क्षेत्र क्रमांक 1 तिलोखन, क्षेत्र क्रमांक 3 डिहुली, क्षेत्र क्रमांक 4 पहाड़हंसवाही, क्षेत्र क्रमांक 5 कछौड़ क्षेत्र क्रमांक 13 साल्ही और क्षेत्र क्रमांक 16 पाराडोल को अजजा महिला को आवंटन किया गया है । वही महिला आरक्षण के तहत 1 सीट अजा महिला के लिए क्षेत्र क्रमांक 14 लालपुर को आवंटन किया गया । और अनारक्षित के लिए कुल 5 सीट है जिसमें 2 सीट मुक्त के लिए आवंटन किया गया, जिसका क्षेत्र क्रमांक 11 नागपुर और क्षेत्र क्रमांक 15 चनवारीडांड को आवंटन किया गया। वही 3 सीट 50 प्रतिशत अनारक्षित महिला के लिए लॉटो के अनुसार निकाला गया । जिसमें क्षेत्र क्रमांक 2 केलुआ, क्षेत्र क्रमांक 8 कठौतिया और क्षेत्र क्रमांक 10 उजियारपुर को महिला अनारक्षित के लिए आवंटन किया गया है ।

खड़गवां: इसी दौरान कलेक्टर ने जनपद पंचायत सदस्य खड़गवां की कुल 12 सीटों का आरक्षण किया गया। जिसमें जिसमें सब से पहले अजजा की 9 सीटों के लिए किया गया। जिसमें मुक्त के लिए 4 सीट दिया है जिसका क्षेत्र क्रमांक 3 सलका, क्षेत्र क्रमांक 4 पैनारी, क्षेत्र क्रमांक 5 बरदर और क्षेत्र क्रमांक 11 छोटे कलुआ को मुक्त के लिए दिया गया है। वही महिला आरक्षण के तहत 1 सीट अजा महिला के लिए क्षेत्र क्रमांक 12 ठग्गगांव को दिया गया है, इसके साथ ही अनारक्षित के लिए कुल 2 सीट दिया गया है जिसमें क्षेत्र क्रमांक 7 खड़गवां को मुक्त के लिए और 50 प्रतिशत महिला आरक्षण के तहत क्षेत्र क्रमांक 8 दुबछोला को महिला अनारक्षित के लिए आवंटन किया गया है।

भरतपुर: इसी तरह कलेक्टर ने भरतपुर जनपद पंचायत सदस्य की कुल 18 सीटों का महिला आरक्षण किया गया। जिसमें सबसे पहले अजजा के कुल 12 सीटों में से 6 सीट मुक्त को आवंटन किया गया । जिसका क्षेत्र क्रमांक 3 डोमहरा, क्षेत्र क्रमांक 4 देवगढ़, क्षेत्र क्रमांक 9 बहरासी, क्षेत्र क्रमांक 13 कमर्जी, क्षेत्र क्रमांक 15 रामगढ़ और क्षेत्र क्रमांक 18 धोवाडांड को मुक्त के लिए आरक्षित किया गया।

बिलासपुर रेलवे स्टेशन में लगेगा हेल्थ कियोस्क

सफर के दौरान यात्रियों को मिलेगी मेडिकल की सुविधा, निर्माण कार्य शुरु

मीडिया ऑडीटर, बिलासपुर निप्र। बिलासपुर रेल मंडल ने यात्रियों के लिए अभिनव पहल की है। दक्षिण पूर्व मध्य रेलवे बिलासपुर जोन के अंतर्गत स्टेशन परिसर में हेल्थ कियोस्क लगाया जाएगा। इसके जरिए यात्रियों को ब्लड प्रेशर, शुगर, बॉडी मास इंडेक्स, ऑक्सीजन लेवल सहित 108 महत्वपूर्ण जांच की रिपोर्ट तुरंत मिलेगी। इस सुविधा के लिए बिलासपुर स्टेशन परिसर में स्थित प्रधानमंत्री जन औषधि केंद्र के बगल में काउंटर का निर्माण कार्य शुरु हो गया है।

लंबी दूरी की यात्रा के दौरान मिलेगी मदद: हेल्थ कियोस्क एक आधुनिक तकनीकी पहल है, जिसके माध्यम से यात्री कम समय में अपनी स्वास्थ्य संबंधित जांच करवा सकेंगे। इस सुविधा से यात्रियों को लंबी दूरी की यात्रा के दौरान अपने स्वास्थ्य की निगरानी करने में मदद मिलेगी। यह कियोस्क अत्याधुनिक उपकरणों और डिजिटल तकनीक से लैस होगा, जिससे यात्रियों को सटीक और त्वरित सेवा प्रदान की जाएगी।

रेलवे के प्रति बढ़ेगी यात्रियों की विश्वसनीयता: वरिष्ठ मंडल वाणिज्य प्रबंधक अनुराग कुमार सिंह ने बताया कि मंडल द्वारा उठाया गया यह कदम न केवल यात्रियों को सुविधा देगा बल्कि रेलवे के प्रति उनकी विश्वसनीयता को भी मजबूत करेगा।

मध्यप्रदेश में प्लास्टिक उद्योग के विकास की अपार संभावनाएं- मुख्यमंत्री डॉ. यादव

भोपाल (एजेंसी)। मुख्यमंत्री डॉ. मोहन यादव ने कहा है कि मध्यप्रदेश में प्लास्टिक उद्योग के विकास की अपार संभावनाएं हैं। यह उद्योग का नया क्षेत्र है और इसका बड़ा बाजार है।

इस उद्योग में रोजगार की भी बेहतर और बड़े अवसर हैं। प्लास्टिक उद्योग के विकास के लिए इसके दुष्प्रभाव को दूर कर सावधानी रखते हुए आगे बढ़ेंगे। प्लास्टिक के दुष्प्रभावों को दूर करने के लिए रियूज और वेस्ट मैनेजमेंट को बढ़ावा दिया जाएगा। रियूज और वेस्ट मैनेजमेंट की तकनीक को विकसित करने के लिए वैज्ञानिकों और विशेषज्ञों की मदद भी ली जाएगी। मुख्यमंत्री डॉ. यादव गुरूवार को इंदौर में प्रारंभ हुए प्लास्टिक उद्योग सम्मेलन प्लास्टपैक 2025 को संबोधित कर रहे थे। यह सम्मेलन 12 जनवरी तक उद्योग मेले के रूप में चलेगा। इसमें प्लास्टिक उद्योग से जुड़ी 400 से अधिक कंपनियां और 2 हजार से अधिक प्रदर्शक हिस्सा ले रहे हैं।

यह कार्यक्रम मध्यप्रदेश औद्योगिक विकास निगम (एमपीआईडीसी) के सहयोग से हो रहा है। इस अवसर पर जल संसाधन मंत्री

श्री तुलसीराम सिलावट, महापौर श्री पुष्यमित्र भार्गव, विधायक श्री रमेश मेंदोला तथा श्री मधु वर्मा, महापौर परिषद के सदस्य श्री अभिषेक शर्मा तथा इंडियन प्लास्टपेक फोरम के चेयरमेन श्री सचिन बंसल आदि मौजूद थे।

मुख्यमंत्री डॉ. यादव ने कहा कि प्लास्टिक उद्योग के विकास की प्रदेश में अपार संभावनाएं हैं। इस उद्योग के विकास में पूरी मदद दी जाएगी। बदलते दौर में प्लास्टिक का उपयोग तेजी से बढ़ रहा है। यह जीवन उपयोगी भी है। प्लास्टिक ने अपनी उपयोगिता कोविड काल में साबित की है। यह जीवन रक्षक के रूप में सामने आया है।

कोविड के दौरान पीपीई कीट हो या मॉस्क आदि में प्लास्टिक का उपयोग हुआ है। जीवन में इसकी उपयोगिता को नकारा नहीं जा सकता है। प्लास्टिक के दुष्प्रभाव भी हैं। इन दुष्प्रभावों को दूर करने के प्रयास होंगे। पर्यावरण की चिंता भी रखी जायेगी।

मुख्यमंत्री डॉ. यादव ने कहा कि प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी के मार्गदर्शन में मध्यप्रदेश में औद्योगिक विकास को नई गति और नई दिशा दी जा रही है। प्रदेश में औद्योगिक निवेश को प्रोत्साहित करने के लिए रिजनल स्तर पर इन्वेस्टर समिट आयोजित किये जा रहे हैं। इसके बेहतर परिणाम भी मिल रहें हैं। प्रदेश में अब तक 6 रिजनल इन्वेस्टर समिट आयोजित हो चुकी है। इनके माध्यम से चार लाख करोड़ रूपये का निवेश प्रदेश में आया है। इससे लगभग तीन लाख लोगों को रोजगा मिलेगा। उक्त निवेश से प्रदेश में 200 करोड़ रूपये का राजस्व भी प्राप्त होगा। मुख्यमंत्री डॉ. यादव ने प्रदेश में गुजरात मॉडल पर तेजी से विकास किया जा रहा है। कार्यक्रम का शुभारंभ मुख्यमंत्री डॉ. यादव ने दीप प्रज्वलित कर किया। उन्होंने सम्मेलन में लगाये गये स्टॉलों का अवलोकन भी किया।

कार्यक्रम के प्रारंभ में इंडियन प्लास्ट पैक फोरम के चेयरमेन श्री सचिन बंसल ने स्वागत भाषण देते हुए आयोजन के संबंध में जानकारी दी। उन्होंने बताया कि मध्यप्रदेश औद्योगिक विकास निगम (एमपीआईडीसी) के साझा प्रयासों से आयोजित इस विशाल सम्मेलन में 400 से अधिक कंपनियां अपनी नवीनतम तकनीक, उत्पाद और नवाचारों का प्रदर्शन कर रही हैं। इस आयोजन में 2 हजार से अधिक प्रदर्शक भाग ले रहे है। एक्जीबिशन सेंटर को छह अलग अलग डोम में विभाजित किया गया है,

जहां लाइव मशीनों और उत्पादों का प्रदर्शन किया जा रहा है। यह सम्मेलन व्यापारियों और उद्यमियों के लिए तो एक मंच है ही, साथ ही छात्रों, शोधकर्ताओं और पर्यावरणविदों के लिए भी एक ज्ञानवर्धक अनुभव प्रदान करेगा।

कोरोना वायरस जैसे एचएमपीवी के देश में 11 केस

नई दिल्ली (एजेंसी)। कोरोना वायरस जैसे ह्यूमन मेटान्यूमोवायरस के गुरुवार को 2 केस मिले हैं। पहला मामला उत्तर प्रदेश का है। लखनऊ में 60 साल की महिला पॉजिटिव पाई गई है। बलरामपुर अस्पताल के निदेशक डॉ. सुशील चौधरी ने दैनिक भास्कर से इसकी पुष्टि की। वहीं, गुजरात के हिम्मतनगर में 7 साल के एक बच्चे की एचएमपीवी रिपोर्ट पॉजीटिव आई है। हालांकि, यह रिपोर्ट प्राइवेट अस्पतला की लैब की है। सरकारी रिपोर्ट शाम तक आएगी। देश में वायरस से जुड़े कुल 11 मामले हो गए हैं। महाराष्ट्र में 3, गुजरात, कर्नाटक और तमिलनाडु में 2-2, पश्चिम बंगाल और यूपी में एक-एक

केस सामने आए हैं।

एचएमपीवी केस सामने आने के बाद राज्यों ने भी सतर्कता बढ़ा दी है। पंजाब में बुजुर्गों और बच्चों को मास्क पहनने की सलाह दी गई है। इधर गुजरात में अस्पतालों में आइसोलेशन वार्ड बनाए जा रहे हैं।

हरियाणा में भी स्वास्थ्य विभाग को एचएमपीवी केसेस पर निगरानी रखने के आदेश दिए गए हैं। छोटे बच्चे सबसे ज्यादा प्रभावित एचएमपीवी संक्रमित होने पर मरीजों में सर्दी और कोविड-19 जैसे लक्षण दिखाई देते हैं। इसका सबसे ज्यादा असर छोटे बच्चों पर देखा जा रहा है। इनमें 2 साल से कम उम्र के बच्चे सबसे ज्यादा प्रभावित हैं। केंद्र ने राज्यों को इन्फ्लूएंजा लाइक इलनेस और सीवर एक्यूट रेस्पिरेट्री इश्यूज जैसी सांस की बीमारियों की निगरानी बढ़ाने और एचएमपीवी के बारे में जागरूकता फैलाने की सलाह दी है।

ऑफिस पार्किंग में महिला सहकर्मी की चाकू मारकर हत्या

पुणे (एजेंसी)। पुणे के एक कॉल सेंटर में काम करने वाले युवक ने मंगलवार को कंपनी की पार्किंग में सहकर्मी युवती की चाकू मारकर हत्या कर दी। इस घटना का वीडियो सोशल मीडिया पर सामने आया है कि, जिसमें दिख रहा है कि लड़की जमीन पर बैठी है और युवक उस पर चाकू से वार कर रहा है। इस दौरान वहां कई लोग खड़े दिखाई देते हैं, लेकिन कोई भी युवक को नहीं रोकता। जब युवक चाकू फेंककर जाने लगता है, तो लोग आगे बढ़ते हैं और उसे रोकते हैं। कुछ लोग उसके साथ मार-पीट भी करते हैं। इसके बाद कुछ लोग जमीन पर पड़ी महिला पर ध्यान देते हैं। आरोपी युवक का नाम कृष्ण कनोजा (30) है। वह येरवाड़ा स्थित ग्लोबल (एक बिजनेस प्रोसेस आउटसोर्सिंग कंपनी) में अकाउंटेंट हैं। उसने बताया कि उसकी सहकर्मी शुभदा कोदारे (28) ने कई बार उससे पैसे उधार लिए थे। उसने कहा कि महिला ने बताया था कि उसके पिता बीमार हैं और उनके इलाज के लिए पैसे की जरूरत है।

केजरीवाल बोले- प्रवेश वर्मा महिलाओं को 1100 बांट रहे

नई दिल्ली (एजेंसी)। दिल्ली के पूर्व मुख्यमंत्री अरविंद केजरीवाल ने चुनाव आयोग से बीजेपी नेता प्रवेश वर्मा के घर रेड डालने की अपील की है। उन्होंने बीजेपी नेता प्रवेश वर्मा पर महिलाओं को खुले में 1100 रुपए बांटने का आरोप लगाया है। केजरीवाल ने कहा कि भाजपा नेता नौकरियों का झांसा देकर लोगों से वोट मांग रहे हैं और चुनाव आचार संहिता का उल्लंघन कर रहे है। उनकी उम्मीदवारी रद्द कर देना चाहिए। केजरीवाल ने डिस्ट्रिक्ट इलेक्शन ऑफिसर को तत्काल प्रभाव से सस्पेंड और ट्रांसफर करने की भी मांग की है। इसको लेकर आम आदमी पार्टी के प्रतिनिधिमंडल ने गुरुवार को मुख्य चुनाव आयुक्त से मुलाकात की। दिल्ली की 70 विधानसभा सीटों पर सिंगल फेज में 5 फरवरी को वोटिंग होगी। रिजल्ट 8 फरवरी को आएंगे। मुख्य चुनाव आयुक्त राजीव कुमार ने मंगलवार को यह जानकारी दी। तारीखों की घोषणा के दिन से रिजल्ट तक दिल्ली चुनाव की प्रक्रिया 33 दिन में पूरी हो जाएगी।

राहुल ने आइसक्रीम शॉप पर बनाई कोल्ड कॉफी

नई दिल्ली (एजेंसी)। राहुल गांधी दिल्ली के पटेल नगर में एक आइसक्रीम शॉप पर गए, जहां उन्होंने कोल्ड कॉफी बनाई। केवेंटर्स ब्रांड की इस शॉप में जाने और उसके ओनर्स से चर्चा का एक वीडियो राहुल ने एक्स पर शेयर किया है।

राहुल ने लिखा कि आप नई पीढ़ी और नए बाजार के लिए विरासत ब्रांड को कैसे बदल सकते हैं। ये केवेंटर्स के युवा

संस्थापकों ने मुझे बताया। केवेंटर्स जैसे निष्पक्ष व्यवसायों ने पीढ़ियों से हमारी आर्थिक वृद्धि को गति दी है। इसलिए हमें उनका समर्थन करने की कोशिश करनी चाहिए।

इस बीच केवेंटर्स के ओनर्स अमन और अगस्त्य ने उनसे फ्यूचर इन्वेस्टमेंट प्लान के बारे में पूछा तो उन्होंने जवाब दिया- मैं केवेंटर्स को देख रहा हूं और निवेश का फैसला करने की कोशिश कर रहा हूं।

पुलिस को असम की जगह नगालैंड ले गया गूगल मैप

गुवाहाटी (एजेंसी)। असम के जोरहाट पुलिस की 16 सदस्यों की टीम एक आरोपी को पकड़ने निकली और गूगल डायरेक्शन पर आगे बढ़ी। लेकिन रास्ता भटककर और नगालैंड के मोकोकचुंग जिले में पहुंच गई। यहां के लोगों ने पुलिस टीम को घुसपैठिया समझा और उन पर हमला कर दिया। इन लोगों को रातभर बंदी बनाए रखा। घटना मंगलवार की है। दरअसल यह सब गूगल मैप के कारण हुआ। जहां पुलिस टीम पहुंची, वह नगालैंड का एक चाय बागान था।

असम खदान हादसा-72 घंटे से 8 मजदूर फंसे

गुवाहाटी (एजेंसी)। असम के दीमा हसाओ जिले के उमरंगसो में 300 फीट गहरी कोयला खदान में 8 मजदूर पिछले 72 घंटे से फंसे हैं। एक मजदूर का शव बुधवार को निकाला गया था। रेस्क्यू में अब एयरफोर्स का एयरक्राफ्ट और हेलिकॉप्टर भी जुट गए हैं।

एनडीआरएफ और एसडीआरएफ की टीम भी मदद कर रही है। भारतीय सेना और असम राइफल्स के गोताखोर और मेडिकल टीम के साथ इंजीनियर्स टास्क फोर्स भी मौजूद हैं।

एनडीआरएफ इंस्पेक्टर रोशन कुमार चंद ने बताया, वर्टिकल एरिया सर्च कर लिया गया है। लगातार पंपिंग के बाद भी पानी का लेबल घट नहीं रहा है। महाराष्ट्र से नई हैवी पंपिग मशीन मंगवाई गई है।

इससे पहले बुधवार को नेवी के (रिमोटली ऑपरेटेड व्हीकल) को सुरंग के अंदर भेजा गया था। आरओवी फोटो खींचने में सक्षम और सोनार तरंगों से लैस है। हालांकि, इसमें कुछ नहीं दिखाई दिया।हादसा 6 जनवरी को हुआ था, जब मजदूर खदान में कोयला निकाल रहे थे। मजदूरों के रेस्क्यू के लिए सेना को लगाया गया है। रिपोर्ट्स के मुताबिक, ये रैट माइनर्स की खदान है। इसमें 100 फीट तक पानी भर गया है, जिसे दो मोटर की मदद से निकाला जा रहा है।

ओडिशा में मोदी बोले-अप्रवासियों के दिल में भारत धड़कता है

नई दिल्ली (एजेंसी)। प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी गुरुवार को ओडिशा के भुवनेश्वर में 18वें प्रवासी भारतीय सम्मेलन में शामिल हुए। मोदी ने कहा- अप्रवासी जहां जाते हैं उसे अपना बना लेते हैं। इसके बावजूद उनके दिल में हमेशा भारत धड़कता है। इसी के चलते दुनिया में मेरा सिर ऊंचा रहता है। पीएम ने आगे कहा कि, भारत मेड इन इंडिया फाइटर जेट बना रहा है। वो दिन दूर नहीं जब आप (अप्रवासी भारतीय) किसी मेड इन इंडिया प्लेन से ही प्रवासी भारतीय दिवस मनाने आएंगे। इस कार्यक्रम को त्रिनिदाद और टोबैगो की राष्ट्रपति क्रिस्टीन कार्ला कंगालू ने भी वर्चुअली संबोधित किया। मोदी ने प्रवासी भारतीय एक्सप्रेस को भी हरी झंडी भी दिखाई। यह भारतीय प्रवासियों के लिए स्पेशल टूरिस्ट ट्रेन है, जो दिल्ली के निजामुद्दीन रेलवे स्टेशन से चली और तीन सप्ताह तक कई टूरिस्ट प्लेसेज तक जाएगी। विदेश मंत्रालय की प्रवासी तीर्थ दर्शन योजना के तहत इसका संचालन किया जा रहा है।

उमर अब्दुल्ला बोले- इंडिया ब्लॉक को खत्म कर देना चाहिए

नई दिल्ली। जम्मू-कश्मीर के मुख्यमंत्री उमर अब्दुल्ला ने गुरुवार को इंडिया अलायंस खत्म करने की बात कही। उन्होंने कहा कि लोकसभा चुनाव के बाद इसकी कोई बैठक नहीं हुई है। यह गठबंधन लोकसभा चुनाव तक ही था तो इसे खत्म कर देना चाहिए। इसके पास न कोई एजेंडा है और न ही कोई लीडरशिप। दिल्ली चुनाव को लेकर उमर अब्दुल्ला ने कहा कि दिल्ली में क्या चल रहा है। इसके बारे में मैं कुछ नहीं कह सकता, क्योंकि दिल्ली चुनाव से हमारा कोई लेना-देना नहीं है। जो पार्टी वहां मौजूद हैं वो तय करें कि बीजेपी का

मुकाबला किस बेहतर तरीके से किया जा सकता है। वहीं, उमर के पिता और नेशनल कॉन्फ्रेंस के मुखिया फारूक अब्दुल्ला ने हम भाजपा के साथ नहीं हैं और न ही हमारा उनसे कोई संबंध है। इंडिया गठबंधन स्थायी है। यह हर दिन और हर पल के लिए है। इंडिया की आखिरी बैठक 1 जून 2024 को हुई थी। उसके बाद हरियाणा, जम्मू-कश्मीर, महाराष्ट्र और झारखंड में विधानसभा चुनाव हो चुके हैं।

7 दिसंबर को ममता ने कहा था- इंडिया ब्लॉक मैंने बनाया, मौका मिला तो लीड करूंगी पश्चिम बंगाल की मुख्यमंत्री ममता बनर्जी ने हरियाणा-महाराष्ट्र और उपचुनावों में इंडिया ब्लॉक के खराब प्रदर्शन को लेकर 7 दिसंबर को नाराजगी जताई थी।

उन्होंने कहा था, मैंने इंडिया गठबंधन बनाया। इसका नेतृत्व करने

21 से 29 जनवरी तक आम जनता के लिए बंद रहेगा राष्ट्रपति भवन

नई दिल्ली (एजेंसी)। गणतंत्र दिवस परेड और बीटिंग रिट्रीट समारोह के कारण राष्ट्रपति भवन (सर्किट-1) 21 से 29 जनवरी तक आम जनता के लिए बंद रहेगा। सर्किट-1 आने वाले विजिटर्स को राष्ट्रपति भवन के मुख्य भवन का भ्रमण कराता है, जिसमें उन्हें भवन के प्रांगण और प्रमुख कक्ष तथा लंबा ड्राइंग रूम दिखाया जाता है। राष्ट्रपति कार्यालय से जारी बयान में कहा गया है कि गणतंत्र दिवस परेड के लिए रिहर्सल के कारण राष्ट्रपति भवन में 11, 18 और 25 जनवरी को गार्ड ऑफ चेंज समारोह भी नहीं होगा। राष्ट्रपति भवन के प्रांगण में होने वाला गार्ड ऑफ चेंज समारोह एक सैन्य परंपरा है। जिसे हर हफ्ते आयोजित किया जाता है। इस वर्ष गणतंत्र दिवस परेड के लिए लगभग 10,000 विशेष अतिथियों को आमंत्रित किया गया है। इनमें सरपंच, आपदा राहत कार्यकर्ता, वाटर वॉरियर्स, हथकरघा और हस्तशिल्प कारीगर, मन की बात के प्रतिभागी, माई भारत वॉलेंटियर्स, पूर्वोत्तर राज्यों से आए अतिथि और बेस्ट स्टार्ट-अप शामिल हैं।

तिरुपति में 91 काउंटरों में 4000 लोग थे

तिरुपति (एजेंसी)। आंध्र प्रदेश के श्री तिरुपति मंदिर में बुधवार देर रात 9:30 बजे वैकुंठ द्वार दर्शन टिकट काउंटर के पास भगदड़ मच गई थी। हादसे में एक महिला समेत 6 लोगों की मौत हो गई और 40 लोग घायल हो गए हैं। दरअसल शुक्रवार से शुरू होने वाले 10 दिवसीय विशेष वैकुंठ द्वार दर्शनम के लिए टिकट बांटे जा रहे थे। मंदिर कमेटी ने 91 काउंटर खोले थे। इनमें करीब 4 हजार की भीड़ थी। इसी दौरान लाइन में लगी एक महिला बेहोश हो गई। इलाज के लिए उसे गेट खोलकर निकाला गया। इस दौरान लोग अंदर घुसने लगे। भगदड़ जैसी स्थिति बन गई। जिसमें बीमार महिला की भी मौत हो गई। जिस द्वार पर हादसा हुआ, उसे 10 जनवरी को खोला जाना था एक दिन पहले

मंगलवार को तिरुमाला तिरुपति देवस्थानम (ञ्ञष्ठ) के कार्यकारी अधिकारी जे श्यामला राव ने बताया था कि 10 से 19 जनवरी तक वैकुंठ एकादशी पर वैकुंठ द्वार दर्शन के लिए खोले जाने थे। सुबह 4.30 बजे से प्रोटोकॉल दर्शन से शुरू होगा, उसके बाद सुबह 8 बजे से सर्व दर्शन शुरू होगा। इसके लिए लोग टोकन लेने के लिए लाइन में लगे थे। इन 10 दिनों में करीब 7 लाख भक्तों के आने की संभावना है।

हरियाणा के शंभू बॉर्डर पर किसान ने सुसाइड किया

चंडीगढ़ (एजेंसी)। हरियाणा-पंजाब के शंभू बॉर्डर पर चल रहे किसान आंदोलन के दौरान गुरुवार को एक किसान ने सल्फास खाकर आत्महत्या कर ली। किसानों के बताया- गुरुवार सुबह लंगर स्थल के पास ही तरनतारन जिले के पहूविंड गांव में रहने वाले रेशम सिंह (55) ने सल्फास खाया। उसे पटियाला के राजिंदरा अस्पताल में भर्ती कराया गया, जहां उसने दम तोड़ दिया।

किसान नेता तेजबीर सिंह ने कहा कि रेशम शंभू और खनौरी बॉर्डर पर 11 महीने से आंदोलन के बावजूद सरकार की तरफ से इसका समाधान न निकालने से नाराज था।

इससे पहले भी 14 दिसंबर को

किसान रणजोध सिंह ने भी सल्फास खा लिया था। वह उस दिन दिल्ली कूच न करने देने से नाराज हुआ था।

करीब 4 दिन बाद उसकी पटियाला के राजिंदरा अस्पताल में मौत हो गई थी।

वहीं संयुक्त किसान मोर्चा (स्यरू) ने इस आंदोलन को समर्थन दे दिया है। गुरुवार (9 जनवरी) को मोगा में हुई महापंचायत में किसान नेता राकेश टिकैत और जोगिंदर उगराहां ने कहा कि कल उनकी 6 मेंबरी कमेटी की अगुआई में 101 किसानों का जत्था खनौरी बॉर्डर जाएगा। जहां वे सरवण पंधेर और जगजीत डल्लेवाल की सहमति लेंगे। उधर, खनौरी बॉर्डर पर 45वें दिन किसान नेता जगजीत सिंह डल्लेवाल का आमरण अनशन जारी है। उनकी हालत गंभीर है। यहीं गीजर फटने से गुरुवार को एक किसान झुलस गया। उसे पटियाला के समाना स्थित सरकारी अस्पताल में लाया गया। उसके हाथ और पैर झुलसे हैं। किसान की पहचान गुरदयाल के रूप में हुई है।

जल्द होगी मोहम्मद शमी की वापसी

नई दिल्ली (एजेंसी)। क्रिकेट फैंस मोहम्मद शमी का क्रिकेट मैदान पर बेसब्री से इंतजार कर रहे हैं। वर्ल्ड कप 2023 फाइनल के बाद से शमी लगातार इंटरनेशनल क्रिकेट से दूर चल रहे हैं। इस आईसीसी टूर्नामें भी वह चोट के साथ खेले थे। टूर्नामेंट खत्म होने के बाद उन्होंने सर्जरी जरूर करवाई, लेकिन उनकी फिटनेस को लेकर समस्या बनी रही। बीजीटी टेस्ट सीरीज में भी टीम इंडिया में उनकी कमी खली लेकिन अब फैंस का इतंजार खत्म होने वाला है। दरअसल, रिपोर्ट्स के अनुसार शमी इंग्लैंड के खिलाफ आगामी घरेलू लिमिटेड ओवर सीरीज में वापसी कर सकते हैं। इस सीरीज में वह बेहतरीन प्रदर्शन करते हुए चैंपियंस ट्रॉफी में भी अपनी जगह पक्की कर सकते हैं। क्रिकबज की रिपोर्ट के अनुसार, नेशनल क्रिकेट अकादमी की मेडिकल टीम शमी पर कड़ी नजर रखे हुए है। सर्जरी के बाद उनके घुटने में हल्की सी सूजन आ गई थी जिसके कारण वह हाल ही में खत्म हो गई। बीजीटी के लिए ऑस्ट्रेलिया की उड़ान नहीं भर पाए। बीसीसीआई की चयन समिति के सदस्यों के बड़ौदा में विजय हजारे ट्रॉफी के नॉकआउट मैचों में शामिल होने और शमी के प्रदर्शन पर भी ध्यान देने की उम्मीद है। ऐसा कहा जा रहा है कि उनकी गेंदबाजी पर कोई खास असर नहीं पड़ा है और उनके घुटने में भी कोई खास परेशानी नहीं है। शमी को टीम इंडिया में वापसी के लिए एनसीए से हरी झंडी मिलने की जरूरत है।

विजय हजारे ट्रॉफी में भी छाए मोहम्मद शमी

नई दिल्ली (एजेंसी)। मोहम्मद शमी ने गुरुवार को विजय हजारे ट्रॉफी में बंगाल के लिए खेलते हुए हरियाणा के खिलाफ मैच में दमदार प्रदर्शन किया। भारतीय टीम में वापसी के लिए कड़ी मेहनत कर रहे मोहम्मद शमी की नजरें आगामी इंग्लैंड और चैंपियंस ट्रॉफी के लिए चुनी जाने वाली स्क्वॉड में जगह बनाने पर हैं। तेज गेंदबाज शमी 2023 में हुए वनडे वर्ल्ड कप के फाइनल के बाद से टीम से बाहर चल रहे हैं। पिछले साल उनके एड़ी की सर्जरी भी हुई थी, जिसके कुछ महीने बाद उन्होंने व्हाइट बॉल क्रिकेट में वापसी की है।

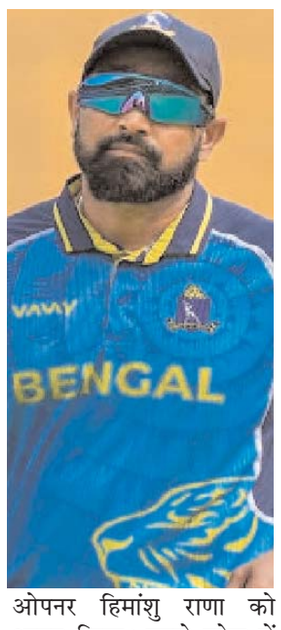

शमी ने नॉकआउट मुकाबले में हरियाणा के खिलाफ 10 ओवर में 61 रन देते हुए तीन विकेट लेकर टीम को जीत दिलाने में अहम भूमिका निभाई। शमी को पहली सफलता छठे ओवर में मिली। उन्होंने हरियाणा के ओपनर हिमांशु राणा को आउट किया। पहले स्पेल में शमी ने 6.67 की इकॉनमी से रन लुटाए लेकिन डेथ ओवर में उन्होंने अच्छी वापसी की और दिनेश बाना, अंशुल कंबोज को पवेलियन का रास्ता दिखाया।

विराट कोहली पर बयान देना नाना पाटेकर को पड़ा भारी

नई दिल्ली (एजेंसी)। विराट कोहली हाल ही में खत्म हुई बॉर्डर-गावस्कर ट्रॉपी में खराब फॉर्म में दिखे थे। सीरीज के पहले टेस्ट में कोहली के बल्ले से शतक निकला था इसके बाद के बाकी चारों मैचों में कोहली बुरी तरह फ्लॉप हुए थे। इसी बीच बॉलीवुड के मशहूर एक्टर नाना पाटेकर ने भारतीय बल्लेबाज पर बयान देते हुए कहा था कि अगर कोहली जल्दी आउट हो जाते हैं तो उन्हें खाना खाने का मन नहीं करता है।

वहीं नाना के इस बयान के बाद सोशल मीडिया पर फैंस जमकर मजे ले रहे हैं। साथही कई मजेदार मीम्स भी वायरल हो रहे हैं। ऑस्ट्रेलिया के खिलाप पांच मैचों की टेस्ट सीरीज की 9 पारियों में कोहली ने कुल 190 रन बनाए थे, जिसमें एक शतक भी शामिल रहा था। इस हिसाब से कोहली 9 में से 8 पारियों में जल्दी आउट होकर पवेलियन लौटे थे।

अब कोहली का जल्दी आउट होने को फैंस नाना पाटेकर के बयान से जोड़ रहे हैं। सोशल मीडिया पर फैंस कई तरह के मीम्स शेयर करते हुए दिख रहे हैं।

जानें कौन हैं नारायण जगदीशन? एक ओवर में लगे 7 चौके, आए कुल 29 रन

नई दिल्ली (एजेंसी)। एक ओवर में 6 चौके या 6 छक्के तो आम सी बात है, लेकिन एक ओवर में 7 चौके या 7 छक्के सोच से बाहर है। हालांकि, मौजूदा समय में खेला जा रहा विजय हजारे ट्रॉफी 2024-25 में ऐसा कारनामा देखने को मिला है। दरअसल, भारतीय बल्लेबाज नारायण जगदीशन क्रीज पर थे और उस ओवर में कुल 7 चौके लगे जो कि अपने में ही कमाल है। विजय हजारे ट्रॉफी का दूसरा प्रीलिमिनरी क्वार्टर फाइनल राजस्थान और तमिलनाडु के बीच खेला जा रहा है। मुकाबले में तमिलनाडु के बल्लेबाज नारायण जगदीशन ने एक ओवर में 6 चौके लगाने का कमाल किया, लेकिन ओवर में लगे कुल 7 चौकों की मदद से 29 रन आए।

24 दिसंबर 1995 को तमिलनाडु के कोयंबटूर में जन्में नारायण जगदीशन भारतीय क्रिकेटर हैं। जिन्होंने 2016 में रणजी ट्रॉफी में तमिलनाडु के लिए प्रथम श्रेणी में डेब्यू किया। इस दौरान उन्हें प्लेयर ऑफ द मैच का पुरस्कार जीता। वहीं नारायण जगदीशन ने वर्तमान में विजय हजारे ट्रॉफी के इस मुकाबले में 65 रनों की पारी खेली।

इस दौरान उन्होंने कुल 52 गेंदों का सामना भी किया और 10 चौके लगाए। विजय हजारे ट्रॉफी के इस सीजन में जगदीशन अब तक 6 पारियों में 60.60 के औसत से कुल 303 रन बना चुके हैं। जिसमें एक शतकीय और एक अर्धशतकीय पारी खेलने में कामयाब हुए हैं।

वहीं बता दें कि, राजस्थान के खिलाफ मुकाबले में 268 रनों के टारगेट का पीछा करने उतरी तमिलनाडु टीम की तरफ से पारी की शुरुआत करने तुषार रहेजा और नारायण जगदीशन उतरे जिसमें दोनों ने मिलकर पहले ओवर में कुल 10 रन बनाए। इसके बाद राजस्थान की तरफ से अमन शेखावत ने दूसरा ओवर फेंका इस दौरान जगदीशन का बल्ले से रौद्र रूप देखने को मिला। इस ओवर की पहली गेंद को अमन ने वाइड फेंक दिया जो सीधे बाउंड्री पार गई। इसके बाद जगदीशन ने पॉइंट के ऊपर से चार रनबनाए, तीसरी गेंद पर फिर थर्ड मैन पर चौका आया, जबकि चौथी गेंद पर पॉइंट की दिशा में खेलते हुए चार रन बनाए। पांचवीं गेंद पर पुल जबकि ओवर की आखिरी गेंद पर जगदीशन ने फ्लिक करने के साथ उसे चार रनों के लिए भेज दिया।

स्मृति मंधाना की कप्तानी में भारतीय टीम की नजरें

नई दिल्ली (एजेंसी)। वेस्टइंडीज के खिलाफ शानदार प्रदर्शन के बाद आत्मविश्वास से ओतप्रोत भारतीय टीम स्मृति मंधाना की कप्तानी में आयरलैंड के खिलाफ शुक्रवार से शुरू हो रही पहली महिला द्विपक्षीय वनडे श्रृंखला में इस लय को कायम रखना चाहेगी। भारत ने वेस्टइंडीज को वनडे श्रृंखला में 3 . 0 से और टी20 में 2 . 1 से हराया। मंधाना ने दोनों प्रारूपों में सर्वाधिक रन बनाये जिसमें वनडे श्रृंखला में 148 और टी20 में 193 रन शामिल है। मंधाना उसी फॉर्म को आयरलैंड के खिलाफ श्रृंखला में जारी रखना चाहेंगी।

नियमित कप्तान हरमनप्रीत कौर की गैर मौजूदगी में वह कप्तानी की भी जिम्मेदारी संभालेंगी। हरमनप्रीत और तेज गेंदबाज रेणुका सिंह को आराम दिया गया है। हरमनप्रीत और रेणुका की गैर मौजूदगी में हरलीन देयोल, प्रतीका रावल और जेमिमा रौड्रिग्स पर रन बनाने की जिम्मेदारी होगी। देयोल ने वनडे श्रृंखला में 160 रन बनाये जबकि रावल ने 134 और जेमिमा ने 112 रन का योगदान दिया। गेंदबाजी में रेणुका की कमी खलेगी जिन्होंने वेस्टइंडीज के खिलाफ दस विकेट लिये थे। अब नयी गेंदबाज टिटास साधू और साइमा ठाकोर पर बड़ी जिम्मेदारी होगी। वनडे में तीन और टी20 में 13 विकेट ले चुकी साधू पर शुरूआती विकेट लेने की जिम्मेदारी होगी। उन्होंने घरेलू और अंतरराष्ट्रीय क्रिकेट में अपनी रफ्तार और स्विंग से प्रभावित किया है। वहीं साइमा ने अब तक आठ वनडे में सात विकेट लिये हैं। आफ स्पिनर और उपकप्तान दीप्ति शर्मा की भूमिका भी अहम होगी जिसने वेस्टइंडीज के खिलाफ तीसरे वनडे में 31 रन देकर छह विकेट लिये। उनका साथ देने के लिये प्रिया मिश्रा और तनुजा कंवर होंगी।

हरफनमौला राघवी बिष्ट और सयाली सतघारे को भी टीम में जगह दी गई है जो इस मौके को भुनाना चाहेंगी। दूसरी ओर गैरी लुईस की कप्तानी वाली आयरलैंड टीम के लिये भारत की चुनौती कठिन होगी। आयरलैंड टीम ने अब तक 12 वनडे में एक भी बार भारत को नहीं हराया है। आखिरी बार दोनों टीमों का सामना 2023 टी20 विश्व कप में हुआ था जब भारत ने पांच रन से जीत दर्ज की थी।आयरलैंड की कप्तान गैबी ने कहा ,'' हमारी टीम ने पिछले तीन दिन में हर अभ्यास सत्र में भाग लिया है। हम पहले मैच में जीत के इरादे से उतरेंगे। हम चुनौतियों का सामना करने के लिये हमेशा तैयार हैं।'' उन्होंने कहा ,' हम पहली बार भारतीय टीम के खिलाफ खेल रहे हैं। भारतीय टीम में कुछ बेहतरीन खिलाड़ी हैं और हमारे सामने अच्छी चुनौती होगी।''

टीमें इस प्रकार हैं।

भारत- स्मृति मंधाना (कप्तान) , दीप्ति शर्मा, प्रतीका रावल, हरलीन देयोल, जेमिमा रौड्रिग्स, उमा छेत्री, रिचा घोष, तेजल हसंबिस, राघवी बिष्ट, मिन्नू मनी, प्रिया मिश्रा, तनुजा कंवर, टिटास साधू, साइमा ठाकोर, सयाली सतघारे।

आयरलैंड - गैबी लुईस (कप्तान), एवा केनिंग, क्रिस्टिना रीली, अलाना डालजेल, लौरा डेलानी, जॉर्जिना डेंपसे, सारा फोर्ब्स, अर्लेने केली, जोआना लोगरान, एमी मागिरे, लीह पॉल, ओर्ला प्रेंडेरगास्ट, उना रेमंड होए, फ्रेया सार्जंट, रेबेका स्टोकेल।

वरुण चक्रवर्ती वनडे डेब्यू करने को तैयार!

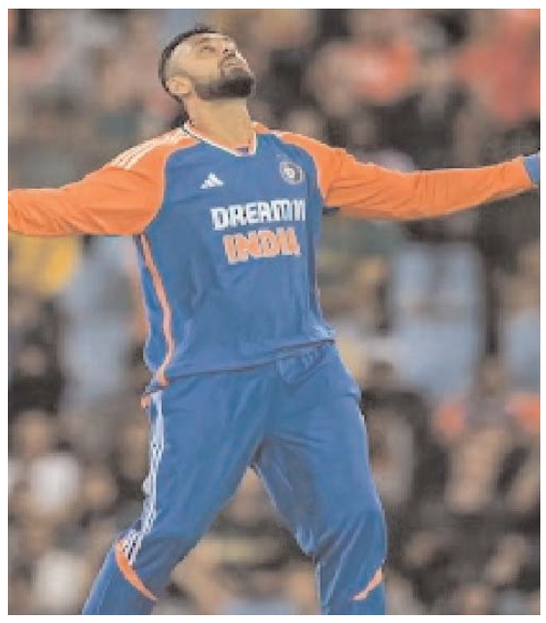

नई दिल्ली (एजेंसी)। अगले महीने 2025 चैंपियंस ट्रॉफी खेली जानी है। इस टूर्नामेंट के लिए अभी तक बीसीसीआई ने टीम का ऐलान नहीं किया है। रिपोर्ट के मुताबिक बोर्ड 11 जनवरी को टीम इंडिया का ऐलान कर देगा। इससे पहले टीम को लेकर कई रिपोर्ट्स सामने आ रही हैं। वहीं एक रिपोर्ट में कहा गया है कि इंग्लैंड के खिलाफ वनेड सीरीज औ 2025 चैंपियंस ट्रॉफी में वरुण चक्रवर्ती को मौका मिल सकता है।

2025 चैंपियंस ट्रॉफी से पहले टीम इंडिया घर पर इंग्लैंड के खिलाफ तीन मैचों की वनडे सीरीज खेलेगी। ये कंफर्म है कि जो टीम इंडिया के खिलाफ वनडे सीरीज खेलेगी, वही टीम 2025 चैंपियंस ट्रॉफी में भी होगी। अब कहा जा रहा है कि आईपीएल और टी20 इंटरनेशनल में बेहतरीन प्रदर्शन करने वाले वरुण चक्रवर्ती को अब वनडे में डेब्यू का मौका मिलेगा।

टीम चुने जाने से पहले वरुण चक्रवर्ती ने घरेलू वनडे टूर्नामेंट विजय हजारे ट्रॉफी में काल का प्रदर्शन किया है। टूर्नामेंट के दूसरे प्री क्वार्टर फाइनल में वरुण ने तमिलनाडु के लिए खेलते हुए राजस्थान के खिलाफ 9 ओवर में 52 रन देकर 5 विकेट झटके हैं। वरुण विजय हजारे टूर्नामेंट में सबसे ज्यादा विकेट लेने वाले गेंदबाज हैं। वह 6 मैचों में 18 विकेट अपने नाम कर चुके हैं।

इस खिलाड़ी के भविष्य पर मंडरा रहा खतरा! वनडे-टेस्ट दोनों से हो सकता है बाहर

नई दिल्ली (एजेंसी)। टीम इंडिया के ऑलराउंडर रविंद्र जडेजा के लिए बुरी खबर है। दरअसल, जडेजा बॉर्डर-गावस्कर ट्रॉपी सीरीज के बाद सभी फॉर्मेट से बाहर हो सकते हैं। बताया जा रहा है कि टीम मैंनेजमेंट पिछले कुछ समय से उनके प्रदर्शन से खुश नहीं है। टीम 2027 वनडे वर्ल्ड कप के लिए एक मजबूत कोर बनाने की कोशिश कर रही है और मैनेजमेंट को यकीन नहीं है कि जडेजा इस प्रोफाइल में फिट बैठता है या नहीं। जडेजा अब टेस्ट और वनडे खेलते हैं 2024 टी20 वर्ल्ड कप जीतने के साथ उन्होंने रिटायरमेंट का ऐलान कर दिया था। जबकि आखिरी वनडे उन्होंने वर्ल्ड कप 2023 फाइनल के रूप में खेला था।

फिलहाल, जडेजा लोअर ऑर्डर में बतौर ऑलराउंडर फिट नहीं बैठ रहे हैं, जिसकी कमी भारत को पिछले कुछ समय से खल रही है। बल्ले से

वह वनडे में काफी संघर्ष करते हुए दिख रहे हैं। हाल के दिनों में उनके स्ट्राइक रोटेशन और दबाव को कम करने की क्षमता पर लगातार सवाल उठ रहे हैं। उनका रिप्लेसमेंट माने जा रहे अक्षर पटेल बैट और गेंद दोनों से धाकड़ प्रदर्शन दे रहे हैं।

श्रीलंका दौर पर गौतम गंभीर के कोचिंग करियर की शुरुआत हुई थी तो रोहित शर्मा और विराट कोहली जैसे सीनियर खिलाड़ियों को टी20 वर्ल्ड कप के तुरंते बाद टीम में शामिल किया गया था, लेकिन वहां जडेजा नहीं थे। उनकी टीम मैंनेजमेंट ने रियान पराग, अक्षर पटेल और वॉशिंगटन सुंदर जैसे अन्य स्पिन-गेंदबाजी ऑलराउंडर्स को मौका दिया था।

वहीं बीजीटी के पहले मुकाबले में भी जडेजा और अश्विन को आराम दिया गया था उनकी जगह वॉशिंगटन सुंदर को जगह दी गई थी। अश्विन ने बीजीटी2024 के बीच ही संन्यास ले लिया था।

बीसीसीआई के एक सूत्र ने टाइम्स ऑफ इंडिया को बताया कि, गंभीर फॉर्मेट के अनुसार कोर टीम बनाने को लेकर बहुत दृढ़ रहे हैं। अब तक, उन्होंने लंबे फॉर्मेट के साथ बहुत ज्यादा छेड़छाड़ नहीं की है, लेकिन वनडे वर्ल्ड कप के लिए एक मजबूत बेस बनाने के लिए उनके पास स्पष्ट दृष्टिकोण है। वह कुछ और पहचाने गए खिलाड़ियों को मौका देने के इच्छुक हैं।

इस खिलाड़ी ने गौतम गंभीर को बताया ढोंगी

नई दिल्ली (एजेंसी)। बॉर्डर-गावस्कर ट्रॉफी में भारत के हारने का बाद कहा जा रहा है कि, टीम इंडिया के हेड कोच गौतम गंभीर की कुर्सी खतरे में है। गंभीर पर अब उनके पूर्व साथी और भारतीय क्रिकेटर मनोज तिवारी ने गंभीर आरोप लगाया है। उन्होंने भारतीय कोच को ढोंगी बताया है।

मनोज तिवारी के मुताबिक गौतम गंभीर जो कहते हैं वह करते नहीं है। उन्होंने कहा कि, गौतम गंभीर पाखंडी हैं। वह जो कहता है वह करता नहीं। कैप्टन मुंबई से हैं, अभिषेक नायर मुंबई से हैं। रोहित को सभी मुद्दों से निपटने के लिए सबसे आगे रखा गया है।

वहीं मनोज ने टीम के गेंदबाजी कोच मॉर्ने मॉर्केल पर भी सवाल उठाए हैं जो कि गंभीर केसाथ लखनऊ सुपर जायंट्स के कोचिंग स्टाफ का हिस्सा रह चुके हैं। उन्होंने कहा कि, गेंदबाजी कोच का क्या उपयोग है? कोच जो भी कहेगा वह मानेंगे। लखनऊ सुपर जायंट्स की ओर से मोर्ने मोर्कल आए। अभिषेक नायर

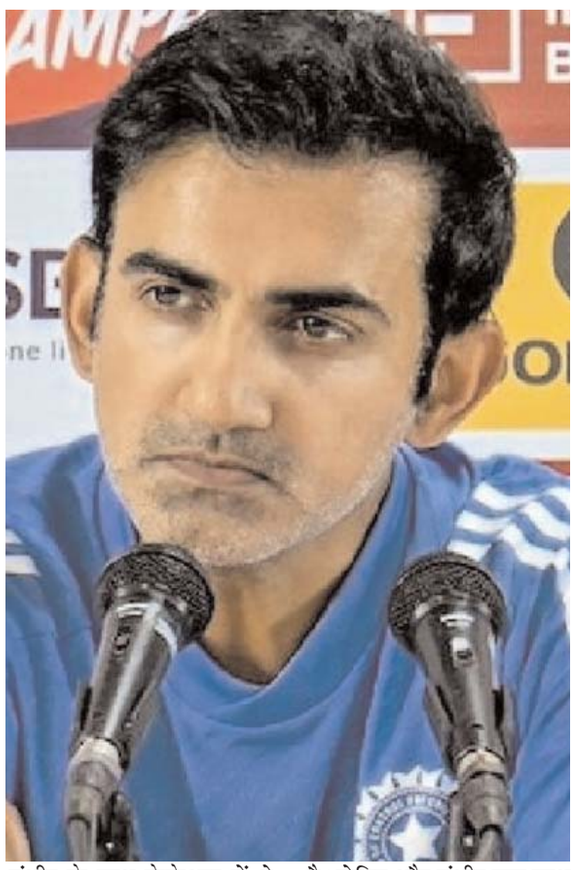

गंभीर के साथ केकेआर में थे और भारतीय मुख्य कोच को उनके साथ सहज महसूस होता है। रोहित और गंभीर एक साथ कैसे काम करेंगे? रोहित वर्ल्ड कप विजेता कप्तान हैं जबकि गंभीर ने एक कपतन और मेंटर दोनों के रूप में केकेआर को आईपीएल खिताब दिलाया।

साथ ही मनोज तिवारी साल 2012 और 2014 में आईपीएल खिताब जीतने वाली केकेआर का हिस्सा थे। गंभीर इस टीम के कप्तान थे। मनोज तिवारी के मुताबिक गंभीर ने जीत का सारा श्रेय ले लिया। उन्होंने कहा कि, गंभीर ने केकेआर को अकेले दम पर खिताब नहीं दिलाया क्योंकि हम सभी ने एक इकाई के रूप में प्रदर्शन किया। जैक्स कैलिस, सुनील नरेन और मैंने सभी ने इस उद्देश्य में योगदा दिया लेकिन श्रेय किसने लिया? गभीर वनडे और टेस्ट में बतौर कोच प्रदर्शन नहीं कर पाए। टीम इंडिया श्रीलंका के खिलाफ सीरीज 0-2 से हारी। इसके बाद वह घर पर न्यूजीलैंड के खिलाफ टेस्ट सीरीज 0-3 से हारी जो कि 12 साल बाद उसकी घर पर पहली हार थी। वहीं भारत ऑस्ट्रेलिय में बीजीटी नहीं जीत सका और वर्ल्ड टेस्ट चैंपियनशिप के लिए क्वालिफाई भी नहीं कर पाया।

नेशनल साईकलिस्ट आशा मालवीय ने छात्राओं को किया प्रेरित

कमिश्नर ने नेशनल साईकलिस्ट बेटी का किया स्वागत

मीडिया ऑडीटर, रीवा (निप्र)। मध्यप्रदेश की राजगढ़ की रहने वाली नेशनल साईकलिस्ट और पर्वतारोही आशा मालवीय आज रीवा पहुंची। कमिश्नर बीएस जामोद ने शासकीय ज्ञानोदय कन्या छात्रावास में आशा मालवीय का आत्मीय स्वागत किया। आशा मालवीय ने छात्रावास की छात्राओं से भेंट करके खुशी जाहिर करते हुए उन्हें प्रेरक उद्बोधन दिया। नेशनल साईकलिस्ट आशा मालवीय ने कहा कि मैंने अब तक साईकिल से दो साल में 42 हजार 430 किलोमीटर की यात्रा की है। मैं राजगढ़ जिले के छोटे से गांव की रहने वाली हूँ। जब मैं दो साल की थी तब मेरे पिता का देहांत हो गया। मेरी माता ने मजदूरी करके मुझे और मेरी बहन को पाला पोसा। माँ के संघर्ष ने मुझे सदैव प्रेरित किया। मेरे मन में सदैव यह संकल्प था कि मैं माँ की जिम्मेदारी उठाऊं। कक्षा दसवीं तक पढ़ाई करने के बाद मैंने नौकरी कर ली। साथ ही अपनी पढ़ाई भी जारी रखी। एथलीट के रूप में मैंने देश में 20 मैराथन और मिनी मैराथन में भाग लेकर प्रतियोगिताएं जीती। इनमें मिली ईनाम की राशि से मैंने अपनी बहन की शादी की और जमीन खरीदकर माँ के लिए घर बनाया। हम यदि दृढ़ संकल्प करके प्रयास करते हैं तो हर सफलता मिलती है। आशा मालवीय ने कहा कि मैंने इस वर्ष 26 हजार किलोमीटर की यात्रा की है। एक नवम्बर 2022 से मैंने अकेले साईकिल यात्रा शुरू की। मुझे प्रशासन सेना और आमजनता का निरंतर सहयोग मिला। मैंने कश्मीर से कन्या कुमारी तक और लेह, लद्दाख, सियाचिन और दुनिया की सबसे ऊंची सड़क खारडोंगला तक साईकलिंग की है। यात्रा के दौरान मैंने 25 मुख्यमंत्रियों, 28 राज्यपालों, 5 लाख महिलाओं और 5 लाख विद्यार्थियों से भेंट की है। रीवा सैनिक स्कूल के दो विद्यार्थी इस समय नौ सेना और थल सेनाध्यक्ष हैं। उनकी प्रेरणा से मैं रीवा आई हूँ। आशा मालवीय ने छात्राओं से कहा कि अपने जीवन का लक्ष्य निर्धारित करके उसके लिए कठिन परिश्रम करें। कंफर्ट जोन में जाने से कोई काम नहीं होता है। सदैव ऐसे कार्य करें जिससे माता-पिता अपने को गौरवमयी मानें। अपने कार्यों से परिवार, समाज और देश का नाम रोशन करें। इस अवसर पर अधिकारीगण तथा छात्राएं उपस्थित रहीं।

सोहागी पहाड़ पर हादसों को रोकने पुलिस ने की नई पहल

मीडिया ऑडीटर, रीवा (निप्र)। रीवा-प्रयागराज हाईवे पर स्थित सोहागी पहाड़ पर सड़क हादसों को रोकने के लिए पुलिस ने एक नई पहल की है। जिसके ज़रिए ना केवल नशे में धुत वाहन चालकों की जांच की जाती है, बल्कि लंबी दूरी से आने वालों को चाय पिलाकर उनकी ताज़गी का ध्यान रखने की भी व्यवस्था की गई है। बतादें कि सोहागी पहाड़ हर माह 15 से 20 हादसे होते हैं, जिनमें सबसे ज़्यादा हादसे ट्रक पलटने से होते हैं। खासकर पहाड़ उतरते समय कई बार इन हादसों में लोग अपनी जान भी गवां देते हैं, विडंबना है कि इन हादसों को रोकने के लिए प्रशासन द्वारा कोई ठोस क़दम नहीं उठाए गए। एस पी विवेक सिंह के निर्देश और एडी पीओ उदीत मिश्रा के मार्गदर्शन में सोहागी थाना प्रभारी पवन शुक्ला ने नवाचार की शुरुआत की है। सोहागी पुलिस ने पहाड़ पर एक पुलिस सहायता केंद्र स्थापित किया है। यहां ट्रक चालकों का ब्रेथ एनालाइज़र से शराब की जांच की जाती है, यदि कोई चालक शराब के नशे में पाया जाता है तो उसकी गाड़ी वहीं रोककर कार्यवाही की जाएगी। साथ ही लंबी दूरी से आने वाले वाहन चालकों का मुंह धुलवाकर उन्हें कुल्हड़ में चाय पिलाकर उनकी थकान दूर कर आगे के लिए रवाना किया जाता है, ताकि वे पहाड़ की ढलान पर सुरक्षित ढंग से वाहन चला सकें।

चार दिनों से लापता किसान का सिलपरा नहर में मिला शव

धान की बुवाई करने खेत गया था, बघवार से बहकर 40 किमी दूर रीवा पहुंचा

मीडिया ऑडीटर, रीवा (निप्र)। चार दिनों से लापता किसान का शव सिलपरा नहर में गुरुवार को मिला। बताया गया कि युवक अचानक लापता हो गया था। परिजनों और गुमशुदगी दर्ज करने के बाद पुलिस भी उसे खोज रही थी।

बिछिया थाना प्रभारी मनीषा उपाध्याय, रामपुर नैकिन थाना क्षेत्र के अकरिया का रहने वाला किसान राज रूप यादव 5 जनवरी को घर से खेत जाने के लिए निकला था, जो घर लौटकर नहीं आया। उसके नहर में डूबने की आशंका के आधार पर चार दिनों से नहर में सर्चिंग की जा रही थी। परिजन केशव प्रसाद यादव ने बताया कि मेरे भाई राज रूप यादव पेशे से एक किसान थे। वे बघवार में घर से खेत जाने के लिए निकले थे। बहुत समय तक घर लौटकर नहीं आए तो हमने तलाश शुरू की। प्रत्यक्षदर्शियों ने हमें बताया कि वे नहर में बह गए हैं। इसके बाद हमने पुलिस को सूचना दी। उन्होंने बताया कि बघवार से रीवा की दूरी 40 किलोमीटर के आसपास है।

बुजुर्ग ने मिल संचालक पर बकाया पैसा न देने का लगाया आरोप

राइस मिल के सामने धरने पर बैठे बुजुर्ग को थाना प्रभारी ने हाथ जोड़कर उठाया

मीडिया ऑडीटर, रीवा (निप्र)। शहर के चोरहटा उद्योग विहार में सच्चा फूड प्रोजेक्ट एंड राइस मिल के सामने एक बुजुर्ग ट्रांसपोर्टर पैसे के लेनदेन को लेकर धरने पर बैठ गया है। ट्रांसपोर्टर ने इसकी शिकायत पहले थाना चोरहटा और पुलिस अधीक्षक रीवा से की। ट्रांसपोर्टर का आरोप है कि मिल मालिक ने 16 लाख रुपए का काम करवा कर उसका भुगतान नहीं किया। जिसके कारण वो धरने पर बैठे हैं।

ऐसे में सूचना के बाद थाना प्रभारी आशीष मिश्रा मौके पर पहुंचे। जहां उन्होंने बुजुर्ग को समझाने की कोशिश की। थाना प्रभारी ने बुजुर्ग से कहा कि मैं थाना प्रभारी हाथ जोड़ रहा हूं, उठ जाइए। जिस पर बुजुर्ग ने कहा कि चाहे मेरी जान चली जाए, मैं अपना अधिकार लेकर रहूंगा। आरोप है कि राइस मिल के संचालक ने प्रदर्शन कर रहे बुजुर्ग ट्रांसपोर्टर पर कड़ाके की ठंड में ठंडा पानी डलवा दिया। ट्रांसपोर्टर राम द्विवेदी ने बताया कि मैं 2021 से इनके यहां काम कर रहा था। अब तक मेरा 16 लाख रुपए बकाया है। अब यह कह रहे हैं कि मैं आपका पैसा नहीं दूंगा। वहीं पूरे मामले पर सच्चा फूड प्रोडक्ट राइस मिल संचालिका रेखा बेनवानी ने बताया कि इनकी तरफ से कोई पैसे बकाया नहीं है। इनके ड्राइवर मिल के अंदर चोरी किया करते थे। इसीलिए इनको हटाकर हमने दूसरा ट्रांसपोर्टर को रखा है। इसीलिए ये आरोप लगा रहे हैं।

फिलहाल सूचना मिलने के बाद पहुंचे चोरहटा थाना प्रभारी आशीष मिश्रा ने मामले को शांत कराया है और दोनों पक्षों की बातें सुनने के बाद दस्तावेज प्रस्तुत करने की लिए कहा है। बुजुर्ग ट्रांसपोर्टर को आश्वासन दिया गया है कि दस्तावेज में कमी पाए जाने के बाद कार्रवाई की जाएगी। कार्रवाई न होने पर बुजुर्ग ने राइस मिल के सामने आत्महत्या करने के लिए चेतावनी दी है।

वहीं पूरे मामले में चोरहटा थाना प्रभारी आशीष मिश्रा का कहना है कि बुजुर्ग को समझाइश दी गई है कि किसी प्रकार से आवागमन बाधित न करें। क्योंकि यह कानूनन अपराध है। राइस मिल संचालक को भी समझाइश दी गई है।

साइबर फ्रॉड की शिकार महिला की मौत मामले में तीन गिरफ्तार

मीडिया ऑडीटर, रीवा (निप्र)। मऊगंज ज़िले में साइबर फ्रॉड की घटना का शिकार हुई महिला की मौत मामले में पुलिस ने फ्रॉड करने वाली गैंग के तीन सदस्यों को गिरफ्तार कर लिया है। पुलिस , गैंग के इन सभी सदस्यों को राजस्थान के अलवर से गिरफ्तार कर मऊगंज लायी है। बताया गया कि ये गैंग राजस्थान में बैठकर मऊगंज की महिला शिक्षिका से पुराने सिक्कों के बदले करोड़ों का लालच देकर उसे ना सिर्फ फ्रॉड का शिकार बनाया बल्कि उसे इस कदर डराया और धमकाया कि महिला ने अपनी जान दे दी। मामले को गंभीरता से लेते हुए मऊगंज एसपी रचना ठाकुर ने फ्रॉड करने वालों को पकड़ने के लिए टीम गठित कर पूरे मामले का खुलासा कर दिया।

जिला स्तरीय सामूहिक सूर्य नमस्कार का आयोजन 12 को

मीडिया ऑडीटर, रीवा (निप्र)। स्वामी विवेकानंद के जन्मदिन 12 जनवरी को युवा दिवस के रूप में मनाया जाता है। इस दिन जिले के सभी स्कूलों में सामूहिक सूर्य नमस्कार का आयोजन किया जाएगा। जिला स्तरीय सामूहिक सूर्य नमस्कार कार्यक्रम शासकीय उत्कृष्ट उच्चतर माध्यमिक विद्यालय मार्तण्ड क्रमांक एक के परिसर में आयोजित जाएगा। समारोह के मुख्य अतिथि सांसद जनार्दन मिश्र होंगे। कार्यक्रम की अध्यक्षता जिला पंचायत अध्यक्ष नीता कोल करेंगी। समारोह में विशिष्ट अतिथि के रूप में कार्यक्रम में विधायक देवतालाब गिरीश गौतम, विधायक गुढ़ नागेन्द्र सिंह, विधायक सिरमौर दिव्यराज सिंह, विधायक मऊगंज प्रदीप पटेल, विधायक सेमरिया अभय मिश्रा, विधायक त्योंथर सिद्धार्थ तिवारी तथा विधायक मनगवां इंजी. नरेन्द्र प्रजापति शामिल होंगे। जिला शिक्षा अधिकारी सुदामालाल गुप्ता ने सभी आमंत्रितों से समारोह में शामिल होने की अपील की है। कार्यक्रम में विद्यार्थी प्रातः 8.40 बजे तक उपस्थित हो जाएंगे। मुख्य अतिथि एवं विशिष्ट अतिथियों का आगमन प्रातः 8.50 बजे होगा। प्रातः 9 बजे वंदे मातरम का सामूहिक रूप से गायन किया जाएगा। आकाशवाणी के माध्यम से राज्य स्तरीय समारोह का प्रसारण कार्यक्रम में किया जाएगा। राज्य स्तरीय कार्यक्रम के अनुरूप सामूहिक सूर्य नमस्कार एवं प्राणायाम का आयोजन होगा। इसके बाद मुख्य अतिथि का प्रातः 10.30 बजे मुख्य अतिथि का उद्बोधन होगा। प्रातः 10.45 बजे समारोह का समापन होगा।

कलेक्टर ने धान खरीदी केन्द्र का किया निरीक्षण

मीडिया ऑडीटर, रीवा (निप्र)। कलेक्टर मऊगंज अजय वास्तव ने नईगढ़ी अन्तर्गत धान खरीदी केन्द्र बहुती का निरीक्षण किया तथा किसानों से संवाद कर केन्द्र में व्यवस्थाओं के विषय में जानकारी ली। कलेक्टर ने उपार्जित धान की अपने समक्ष तुलाई कराई तथा निर्देश दिये कि कम तुलाई पर संबंधित के पेनाल्टी लगायें। उन्होंने खरीदी केन्द्र में वरदानों की कमी पर संबंधितों को निर्देश दिये कि अतिरिक्त वारदानें तत्काल मंगायें। कलेक्टर ने किसानों से सहयोग की अपेक्षा भी की। भ्रमण के क्रम में कलेक्टर ने रघुनाथगंज में उद्यान विभाग अन्तर्गत संचालित रोपणी का निरीक्षण किया तथा आवश्यक व्यवस्थायें कराने के निर्देश दिया। इस दौरान एसडीएम बी.पी. पाण्डेय, सहायक संचालक उद्यानिकी योगेश पाठक उपस्थित रहे।

आदर्श ग्राम योजना में 9 गांव शामिल

मीडिया ऑडीटर, रीवा (निप्र)। जनजातीय कार्य विभाग के तहत ग्राम पंचायतों के समग्र विकास के लिए संचालित प्रधानमंत्री आदर्श ग्राम योजना में वर्ष 2023-24 के लिए रीवा जिले के 9 गांव शामिल किए गए हैं। इन गांवों में आधारभूत सुविधाओं के विकास की निगरानी के लिए प्रधानमंत्री आदर्श ग्राम योजना अभिशरण समिति गठित की गई है। इस 18 सदस्यीय समिति का अध्यक्ष ग्राम पंचायत के सरपंच को बनाया गया है। समिति में विभिन्न विभागों के मैदानी कर्मचारी शामिल किए गए हैं। इस संबंध में कलेक्टर प्रतिभा पाल ने बताया कि आदर्श ग्राम योजना के तहत विकासखण्ड रीवा में ग्राम गढ़वा, बेलहा तथा कुल्लु एवं विकासखण्ड रायपुर कर्चुलियान में ग्राम खुज को शामिल किया गया है। इसी तरह विकासखण्ड सिरमौर में ग्राम हर्दीखुर्द और पथरी, विकासखण्ड त्योंथर में ग्राम कटरा और शंकरपुर तथा विकासखण्ड जवा में ग्राम बराह को शामिल किया गया है।

कमिश्नर ने ज्ञानोदय अनुसूचित जाति छात्रावास का किया निरीक्षण

कॅरियर के लिए अभी से करें तैयारी

मीडिया ऑडीटर, रीवा (निप्र)। रीवा संभाग के कमिश्नर बीएस जामोद ने अनुसूचित जाति कन्या ज्ञानोदय छात्रावास का निरीक्षण किया। कमिश्नर ने छात्रावास की छात्राओं के साथ संवाद करके भोजन, पानी, साफ-सफाई, पठन-पाठन व्यवस्था की जानकारी ली। कमिश्नर ने छात्रावास के किचन, स्टोर, छात्राओं के कक्ष तथा टायलेट का निरीक्षण किया। कमिश्नर ने टायलेट और बाथरूम की उचित साफ-सफाई के निर्देश दिए। कमिश्नर ने छात्राओं से संवाद करते हुए कहा कि शिक्षा से ही विकास के सारे मार्ग प्रशस्त होते हैं। अभी आप सबने लगन और मेहनत के साथ पढ़ाई की तो आपका भविष्य उज्ज्वल बनेगा। आपको जीवन में जो कुछ बनना है उसका लक्ष्य अभी निर्धारित करके उसके अनुरूप तैयारी करें। सच्ची लगन हो तो हर बड़ी सफलता प्राप्त करने में कोई कठिनाई नहीं होती। कमिश्नर से संवाद करते हुए बेटियों ने अपने कॅरियर के संबंध में चर्चा की। कमिश्नर ने कक्षा 12वीं, 6वीं तथा 10वीं में छात्राओं की दर्ज संख्या की तुलना में कम उपस्थिति पर नाराजगी व्यक्त की। कमिश्नर ने कहा कि परीक्षाएं नजदीक हैं इसलिए कोई भी छात्रा अवकाश पर न जाए। परीक्षा से पहले के समय का पूरा उपयोग करते हुए परीक्षाओं की तैयारी करे। निरीक्षण के समय संयुक्त आयुक्त दिव्या त्रिपाठी, प्रभारी उपायुक्त ट्राईबल पाण्डेय, अधीक्षिका तथा अन्य कर्मचारी उपस्थित रहे। कमिश्नर ने उपायुक्त को छात्रावास भवन में सोलर पैनल लगाने तथा छात्राओं के कक्षों में कुर्सी-टेबल की व्यवस्था कराने के निर्देश दिए।

डाक जीवन बीमा निवेश की सुरक्षा पर सरकार की गारंटी

मीडिया ऑडीटर, रीवा (निप्र)। जीवन बीमा के क्षेत्र में डाक विभाग लम्बे समय से कार्यरत है। डाक जीवन बीमा लाभ अब निजी क्षेत्र के प्रोफेशनल्स भी उठा सकते हैं। यह जानकारी डाक संभाग के अधीक्षक डाकघर आर.के. तिवारी ने दी। उन्होंने बताया कि बीमा के क्षेत्र में भी डाक विभाग नित नये आयाम स्थापित कर रहा है। डाकघरों में लोगों की आयु और आवश्यकता के हिसाब से जीवन बीमा की कई योजनाएं है, जिनमें सुरक्षा, संतोष, सुविधा, युगल सुरक्षा, सुमंगल व चिल्ड्रन पॉलिसी शामिल है। डाक विभाग ने नवीन टेक्नालॉजी अपनाते हुए कोर इंश्योरेंस सर्विस के तहत साफ्टवेयर के माध्यम से बीमा सेवाओं को भी ऑनलाईन बनाया है। पहले सरकारी व अर्धशासकीय कर्मचारियों तक सीमित डाक जीवन बीमा अब निजी शिक्षण संस्थाओं/विद्यालयों/महाविद्यालयों के कर्मचारियों, अधिकारियों एकाउंटेंट, वास्तुकारों, वकीलों, बैंकर जैसे पेशेवरों और कर्मचारियों के लिए भी उपलब्ध है। निवेश की सुरक्षा पर सरकार की गारंटी, धारा 80 के तहत आयकर में छूट, कम प्रीमियम व अधिक बोनस, पॉलिसी पर लोन की सुविधा, ऑनलाईन प्रीमियम जमा करने की सुविधा, देश के किसी भी डाकघर में प्रीमियम जमा करने की सुविधा और अग्रिम प्रीमियम पर छूट दी जाती है। डाक जीवन बीमा में अधिकतम बीमित सीमा 50 लाख और ग्रामीण डाक जीवन बीमा में 10 लाख है।

वर्ष 2025 के लिए तीन स्थानीय अवकाश

मीडिया ऑडीटर, रीवा (निप्र)। जिले में वर्ष 2025 के लिए तीन स्थानीय अवकाशों की घोषणा की गई है। कलेक्टर प्रतिभा पाल द्वारा जारी आदेश के अनुसार पहला स्थानीय अवकाश 14 जनवरी, मंगलवार को मकर संक्रांति तथा पोंगल के अवसर पर घोषित किया गया है। दूसरा स्थानीय अवकाश 13 मार्च, गुरूवार को होलिका दहन तथा तीसरा स्थानीय अवकाश 27 अगस्त, बुधवार को गणेश चतुर्थी के अवसर पर घोषित किया गया है। घोषित किए गए स्थानीय अवकाश रीवा जिले के सम्पूर्ण सीमा क्षेत्र के सभी शासकीय कार्यालयों तथा संस्थानों में प्रभावशील होंगे। यह अवकाश जिले के कोषालय, उप कोषालय तथा बैंकों पर लागू नहीं होंगे।

मुख्यमंत्री जनकल्याण शिविर का हुआ आयोजन

जनकल्याण पर्व प्रचार सामग्री का किया गया वितरण

मीडिया ऑडीटर, रीवा (निप्र)। मुख्यमंत्री जनकल्याण अभियान अंतर्गत नगर निगम द्वारा वार्डवार शिविर का आयोजन किया जा रहा है। शिविरों में आमजनता के आवेदनों पर मौके पर कार्यवाही करने के साथ पात्र हितग्राहियों को विभिन्न योजनाओं का लाभ दिया जा रहा है। शहरी क्षेत्र के शिविरों मे अब तक 4573 आवेदन प्राप्त हुये जिनमे 4559 स्वीकृत, शेष 14 में कार्यवाही प्रगतिरत है। इसी क्रम में नगर निगम अंतर्गत जोन क्र. एक वार्ड एक शासकीय हायर सेकेण्ड्री स्कूल निपनिया प्रांगण में शिविर आयोजित किया गया। इस दौरान जनसंपर्क विभाग द्वारा मुद्रित शासन विकास योजनाओं एवं परियोजनाओं के जागरूकता हेतु जनकल्याण फोल्डर का वितरण किया गया। शिविर में तहसीलदार शिवशंकर शुक्ला ने आमजन की शिकायतों से अवगत हुये एवं शिविर में दी जा रही हितग्राहीमूलक योजनाओं की प्रगति की जानकारी ली। इस दौरान नगर निगम के अधिकारी तथा अन्य विभागों के अधिकारी, कर्मचारी उपस्थित रहे।

इस वर्ष होंगी चार लोक अदालतें

मीडिया ऑडीटर, रीवा (निप्र)। मध्यप्रदेश राज्य विधिक सेवा प्राधिकरण के तत्वावधान में लोक अदालतों का आयोजन करके आपसी सुलह से प्रकरणों का निराकरण किया जाता है। वर्ष 2025 में रीवा और मऊगंज जिले में चार नेशनल लोक अदालतों का आयोजन किया जाएगा। प्रथम नेशनल लोक अदालत 8 मार्च को तथा दूसरी लोक अदालत 10 मई को आयोजित की जाएगी। इसी तरह तीसरी लोक अदालत 13 सितम्बर तथा चौथी लोक अदालत 13 दिसम्बर को आयोजित की जाएगी। पक्षकार जिला विधिक सेवा प्राधिकरण से संपर्क करके इन लोक अदालतों में आपसी सुलह से प्रकरणों का अंतिम रूप से निराकरण करा सकते हैं।

चाइना डोर की बिक्री व उपयोग को रोकने के लिये निरीक्षण दल गठित

मीडिया ऑडीटर, रीवा (निप्र)। पतंग विक्रेताओं द्वारा चाइना डोर की बिक्री की जाती है जिससे पतंग उड़ाने वाले को क्षति पहुंचने की आशंका रहती है। सुरक्षा की दृष्टि से चाइना डोर की बिक्री व उपयोग को रोकने के लिये कलेक्टर प्रतिभा पाल द्वारा निरीक्षण दल गठित किया गया है। हुजूर/रीवा सहित समस्त अनुभाग के लिये तहसीलदार नायब तहसीलदार व सीईओ जनपद को गठित दल में शामिल किया गया है। निरीक्षण दल अपने कार्य क्षेत्र में आवश्यक कार्यवाही कर समय-समय पर कलेक्टर को अवगत करायेंगे।

स्वत्वाधिकारी मुद्रक/प्रकाशक संदीप द्विवेदी द्वारा मीडिया ऑडीटर पब्लिकेशन प्रा.लिमि. राजीव मार्ग निराला नगर रीवा से मुद्रित कर मीडिया ऑडीटर कार्यालय राजीव मार्ग निराला नगर रीवा से प्रकाशित, **संपादक संदीप द्विवेदी**, आर.एन.आई नं. 69082/97, डाक पंजीयन क्र.- म. प्र./ रीवा संभाग/ 46/2023-2025, प्रधान कार्यालय रीवा (सिटी कार्यालय चक्रधर सिटी सेंटर रीवा) फोन. नं. 9589645803, 7974467831 Mediaauditor1@gmail.com सभी विवादों का न्याय क्षेत्र रीवा होगा।